अक्तूबर 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

इस दुनिया में फादर, मदर और गुरु
तीनों का उपकार है। जो हमें सही मार्ग पर
लाए हैं, उन तीनों का उपकार भुलाया नहीं जा सकता।
अत: आप अपने फादर-मदर और गुरु को नमस्कार करना।
यदि उनके पैर छूए जाएँ तो बहुत अच्छा है, बहुत लाभ होता है।
वह सब से उत्तम विनय कहलाता है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 12
अखंड क्रमांक : 132
अक्तूबर 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

विवेक और विनय, व्यवहार में

संपादकीय

साधक के नज़रिये से आम तौर पर विवेक का मतलब है 'मेरे आत्मा के लिए क्या हितकारी और क्या अहितकारी है,' उस दृष्टिकोण से यथार्थता से तय करना। विवेक अर्थात् सार और असार दोनों को अलग करना, उसे विवेक कहा जाता है।

हाल में परिवारों की सुलगते प्रश्न की जड़ है, विवेक और विनय का अभाव। ज़्यादातर हम अपने वाणी और वर्तन में विवेक और विनय का अनुभव कर सकते हैं। उससे यह समझ में आ जाता है कि हमारे परिवार के संस्कार कैसे हैं और हमारे अंदर कितना सत्व है। एक व्यवहारिक सत्य यह है कि घर के सदस्यों के बीच विवेक और विनय ही हमारे घर की शोभा है।

लोग यह भूल ही गए हैं कि मनुष्य जीवन का हेतु क्या है? मनुष्य जीवन का सार क्या है, उसका भान भूलकर भटक रहे हैं। जहाँ-तहाँ, घर में और बाहर मतभेद, मेरा-तेरा, आग्रह और उसी में मनुष्य अपने आप को बुद्धिमान समझता है लेकिन दादाश्री कहते हैं कि वास्तव में, 'बुद्धिमान तो उसे कहते हैं कि जो घर में और बाहर हर जगह सेफसाइड खोज ले। विवेकपूर्वक सभी का सुख बढ़े वह ढूँढ निकाले।' वहाँ से धर्म की शुरुआत होती है। अध्यात्म एक ऐसी रोड (सड़क) है कि जिस रोड पर आने के बाद अन्य कोई आधि-भौतिक रोड दिखाई ही नहीं देती। अध्यात्म की शुरुआत वहीं से होती है जब अन्य सब दिखाई देना बंद हो जाए। व्यवहार में हित व अहित का विवेक आ जाना, वही अध्यात्म की शुरुआत है।

परम पूज्य दादाश्री दैनिक व्यवहार में विवेक की समझ बहुत ही सादे-सरल उदाहरण जैसे कि माँ-बाप बच्चों का व्यवहार, व्यापार, कोर्ट, सत्संग वगैरह व आत्मा के लिए विवेक के बारे में समझाते हुए कहते हैं कि, 'जहाँ विवेक नहीं है वहाँ व्यक्ति मतभेद और मिथ्यादर्शन में फँस जाता है।' 'जो संसार को विस्मृत करवाए, उस जगह पर बैठे रहना चाहिए और जो संसार की उलझनों में फँसाए, वहाँ से चले जाना चाहिए,' ऐसा विवेक जिसकी समझ में आ जाए उसका काम हो जाएगा।

प्रस्तुत अंक में दादाश्री ने विवेक से सद्विवेक, विनय और परम विनय की हल्की भेदरेखा को स्पष्ट किया है, लेकिन यहाँ व्यवहार में खास तौर पर विवेक पर भार दिया गया है। क्योंकि सर्व प्रथम विवेक जागृत होना चाहिए फिर सद्विवेक, धीरे-धीरे विनय जागता है और बाद में परम विनय जागता है। परमार्थ मार्ग की शुरुआत में विवेक का स्थान है, जब तक विवेक उदय में नहीं आए, वास्तव में तब तक साधक ने मोक्षमार्ग पर चलने की शुरुआत ही नहीं की है। प्राथमिक भूमिका में रहे मुमुक्षु, विवेक की समझ को विकसित करके विवेकपूर्ण दिनचर्या रखें, वही अंतर अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

विवेक और विनय, व्यवहार में

विवेक शून्य, वहाँ मानवता कैसे कह सकते हैं?

दादाश्री : आपके घर में झगड़े होते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : 'माइल्ड' (हल्के) होते हैं या सचमुच में?

प्रश्नकर्ता : सचमुच में भी होते हैं लेकिन दूसरे दिन भूल जाते हैं।

दादाश्री : भूलोगे नहीं तो क्या करोगे? भूल जाते हैं तभी तो वापस झगड़ा होता है न? यदि भूले नहीं होते तो वापस झगड़ा कौन करता? बड़े-बड़े बंगले में पाँच लोग ही रहते हैं फिर भी झगड़ा करते हैं। कुदरत खाने-पीने का देती है तब भी लोग झगड़ा करते हैं! लोग झगड़े, क्लेश-कलह करने में सूरमा हैं। झगड़ने से क्या मिलता है?

प्रश्नकर्ता : नुकसान मिलता है।

दादाश्री : घाटे का व्यापार तो कोई करेगा ही नहीं न! कोई नहीं कहता कि नुकसान का व्यापार करो! कुछ तो नफा कमाई करते होंगे न?

प्रश्नकर्ता : झगड़े में आनंद आता होगा!

दादाश्री : यह दूषमकाल की वजह से शांति नहीं रहती है इसलिए जला हुआ जब दूसरे को जलाए तब उसे शांति होती है। कोई आनंद में हो, वह उसे अच्छा नहीं लगता इसलिए पलीता लगाए तब उसे शांति होती है, ऐसा जगत् का स्वभाव है। बाकी, जानवर भी विवेकी होते हैं, वे झगड़ते नहीं हैं। कुत्ते भी अंदर-अंदर खुद के मुहल्लेवालों से नहीं झगड़ते। बाहर के मुहल्लेवाले आएँ तब सब मिलकर उनसे लड़ते हैं। जबकि ये मूर्ख अंदर-अंदर लड़ते हैं। ये लोग विवेकशून्य हो गए हैं।

अविवेकी बुद्धि उत्पन्न करवाए मतभेद

पूरे दिन बहू के साथ (घर में) मतभेद होते रहते हैं। अगर वह अपने प्रतिद्वंद्वी हों तो फिर ठीक है। यदि सेठ को नौकर से मतभेद हो जाए तो हम समझ जाते हैं न कि इस सेठ में बरकत नहीं है। अगर प्रतिद्वंदी है तो बात अलग है। समान बुद्धिवाले से मतभेद हो जाए तो समझ में आता है लेकिन यह तो असमान बुद्धिवाले से मतभेद हो रहा है। अब क्या हो सकता है? एक दिन भी घर में मतभेद नहीं होना चाहिए। यह मतभेद करते हैं क्योंकि बुद्धि कम है। बुद्धि से यदि सोचे, तो मतभेद करने की ज़रूरत ही नहीं है लेकिन बुद्धि कम है इसलिए वह मतभेद करता है और फिर अपने आप को बुद्धिशाली मानता है। बुद्धिशाली तो उसे कहते हैं कि जो घर में सेफसाइड (सलामती) कर दे, बाहर सेफसाइड कर दे। जिसमें सेफसाइड ज़्यादा, उसे बुद्धिशाली कहते हैं। जो घर में आनंद करवाए उसे बुद्धिशाली कहेंगे या जिसका मुँह फूला हुआ है उसे बुद्धिशाली कहेंगे?

विवेकबुद्धि वाला प्राप्त करवाता है सभी को सुख

प्रश्नकर्ता : यदि कोई विवेक से काम ले तो उसे बुद्धिशाली कह सकते हैं?

दादाश्री : हाँ! विवेकपूर्वक, सभी का सुख बढ़े, ऐसा ढूँढ निकाले। सुख कम हो जाए ऐसा न ढूँढे। यदि हमने तय किया कि घर में मतभेद नहीं करना है और ऐसा तय करके अगर किसी से झंझट हुई न, फिर भी मतभेद नहीं होगा। लेकिन हम ऐसी चाबी लगाए (सेटिंग किए) बगैर ही करते हैं न, इसलिए झंझट हो जाती है। हम शुरू से चाबी लगाने के बाद ही करते हैं। यह तो भाई, घर आकर दखल करता है, पूरा घर बिगाड़ देता है। लाइफ ऐसी क्यों होनी चाहिए! हम अपनी लाइफ को बदल सकते हैं, अपने विचार बदल सकते हैं।

संसार का सार निकालना सीखो

यह तो हमें सार निकालना नहीं आता इसलिए झगड़े होते हैं। व्यापार का सार (बैलेन्सशीट) तो हर साल निकालते हो लेकिन क्या संसार का सार निकाला है कि 'कौन-से बहीखाते में नुकसान है और कौन से बहीखाते में नफा है?' क्या ऐसा आपने नहीं निकाला? ऐसा है न, यह सार सब से पहले निकालना चाहिए कि भाई, बार-बार इस संसार का आराधन करते हैं, तो यह सही है या गलत है? उसमें फायदा होता है या नुकसान होता है! ऐसा सार नहीं निकालना चाहिए?

सार और असार, इन दोनों को समझ लेना, वह है विवेक। सारासार का जिसे भान नहीं है वह मनुष्य ही नहीं कहलाता। यह मनुष्य जन्म मिला है उसमें 'हमारा कितना और पराया कितना,' इसका विवेक करना है। जो संसार को विस्मृत करवाएँ, ऐसी जगह पर बैठे रहना और जो संसार में उलझाएँ वहाँ से निकल जाना, ऐसा विवेक जिनकी समझ में आ जाएगा उनका काम हो जाएगा।

जीवन हेतु के लिए जागृति बढ़ाओ

इस जीवन का हेतु क्या होगा, वह समझ में आता है? यह तो लाइफ पूरी फ्रेक्चर हो गई है। किसलिए जी रहे हैं, उसका भान भी नहीं रहा कि यह मनुष्यसार निकालने के लिए मैं जी रहा हूँ! मनुष्यसार क्या है? तब कहे, जिस गति में जाना हो, वह गति मिले या फिर मोक्ष में जाना हो तो मोक्ष में जाया जा सके। ऐसे मनुष्यसार का किसी को भान ही नहीं है इसलिए भटकते रहते हैं।

ऐसी खोज करते-करते ही आखिर आज आप 'ज्ञानीपुरुष' के पास आ सके! अब आपको 'ज्ञानीपुरुष' से जो-जो चाहिए वह माँग लेना। जो चीज़ें चाहिए वे सभी चीज़ें माँग लेने की आपको छूट है, जितना चाहिए उतना 'टेन्डर' भरने की छूट है।

ऐसा है, बाहर मूली लेने जाएँ तो मूली भी मूल्यवान है, उस मूली के दस पैसे माँगते हैं, और यह (आत्मा का ज्ञान) तो अमूल्य चीज़ है। यानी कि आपको क्या लेना है? इसकी 'वेल्यू' (कीमत) ही नहीं हो सकती न? अर्थात् 'यह लेना है', उसका खुद को लक्ष (जागृति) रखना चाहिए। उसके लिए आपको तैयारी करके रखनी चाहिए। स्कूल में इनाम मिल रहा हो तब भी बच्चे कितनी तैयारी से लेने जाते हैं, कितने अदब से, कितने विनय से, कितने विवेक से इनाम लेने जाते हैं! तो इसके लिए कुछ पूर्व तैयारी हो सकती है क्या? (आत्मज्ञान प्राप्त करने की) भावना और ऐसी सब जागृति हो जानी चाहिए। 'तुझे एक इनाम मिला है', ऐसा कहे, तो बच्चे कितनी मस्ती में आ जाते हैं! जबकि यह तो अमूल्य चीज़ देने की बात है!

अध्यात्म की शुरुआत, विवेक से

अध्यात्म एक ऐसी रोड है कि इस रोड पर जाने के बाद अन्य आधि-भौतिक रोड दिखेंगी ही नहीं। यह रोड ही अलग है। अत: अध्यात्म शुरू

कब से होता है कि जब यह दूसरा सब दिखना बंद हो जाए, फिर भी वह मन में रहे। वे उनके पर्याय, अवस्थाएँ जो हैं, वे मन में चिपके रहें, लेकिन वह रोड दिखनी बंद हो जाए, फिर भी वह मन में रहे। वे उनके पर्याय, अवस्थाएँ जो हैं, वे मन में चिपके रहें, लेकिन वह रोड दिखनी बंद हो जाए। ऐसा है, अध्यात्म में पहले तो क्या अच्छा और हितकारी है और क्या हितकारी नहीं है, उसका विवेक रखना पड़ेगा। हितकारी को हमें ग्रहण करना चाहिए और अहितकारी से दूर रहना चाहिए, इसमें पहले विवेक रखना पड़ेगा।

नहीं चूकना चाहिए व्यवहार विवेक

व्यवहार हमेशा आदर्श रहना चाहिए। जो इंसान निश्चय चूक गया न, उसे (आदर्श) व्यवहार नहीं कहा जाएगा। निश्चय को निश्चय में और व्यवहार को व्यवहार में रखना, उसे आदर्श व्यवहार कहते हैं। मैं पूरे दिन आदर्श व्यवहार में ही रहता हूँ। मेरे घर के आसपास अगर किसी से पूछेंगे न तो सभी कहेंगे कि, 'उन्होंने कभी झगड़ा किया ही नहीं हैं, कभी डाँटा ही नहीं हैं। कभी किसी पर गुस्सा नहीं हुए हैं।' आसपासवाले सभी अगर ऐसा कहें तो वह आदर्श कहलाएगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : कहलाएगा।

दादाश्री : और आपके बारे में आस-पड़ोस में पूछने जाएँ तो? क्या ऐसा कहेंगे कि वे कभी ऊँची आवाज़ में बोले ही नहीं हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो फिर आपने तो व्यवहार भी बिगाड़ा और निश्चय भी बिगाड़ दिया। व्यवहार इतना ही करना है कि बाप बना है तो बच्चों के काम के लिए तू चक्कर मत लगाना, वर्ना बेटे को बुरा लगेगा और जो बैटा है उसे इतना व्यवहार करना है कि तू बाप के काम करना, वर्ना बुरा दिखेगा। व्यवहार में ऐसा विवेक नहीं चूकना है।

चाहिए विनय और विवेक, व्यवहार में

प्रश्नकर्ता : व्यवहार पहले या निश्चय?

दादाश्री : व्यवहार पहले, लेकिन उसका अर्थ फिर ऐसा नहीं है कि व्यवहार के प्रति राग रखो।

प्रश्नकर्ता : तब क्या फिर व्यवहार में निरागी हो जाएँ?

दादाश्री : राग करेगा तो सिंगल (एक) गुनाह है और निरागी हो जाएगा तो डबल (दो गुना) गुनाह है, निरागी भी नहीं रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : निरागी अर्थात् किस तरह?

दादाश्री : व्यवहार के प्रति निस्पृह हो जाएँ, वह। व्यवहार के प्रति निस्पृह अर्थात् 'मदर' (माता) कहें कि, 'तू मेरी बात क्यों नहीं मानता?' तब पुत्र कहेगा, 'मैं आत्मा बन गया हूँ!' ऐसा नहीं चलेगा। व्यवहार में विनय-विवेक सभी कुछ होना चाहिए। अपने व्यवहार से किसी को शिकायत नहीं रहनी चाहिए।

व्यवहार में निश्चय का नहीं बोलना है

अगर कोई कहे कि आपके चार पीढ़ी दूर के चाचा गुज़र गए, तो उनकी अनुपस्थिति में या अकेले में हमें ऐसा नहीं कहना चाहिए कि, 'अरे! मर गए तो हमें क्या परेशानी है?' कहेंगे, 'क्या यह दुनिया सच है? कर्मों के उदय से मर गए।' ऐसा नहीं कहना चाहिए बल्कि ऐसा सब कहना चाहिए कि 'यह बहुत गलत हुआ। उनकी आत्मा को शांति मिले।'

बोलने में व्यवहार जितना गलत हुआ उतना सब खुद पर आएगा। व्यवहार में विवेक होना चाहिए। वहाँ निश्चय की बात नहीं कर सकते।

व्यवहार में विवेक व विनय का भेद

प्रश्नकर्ता : दादा, व्यवहार में विवेक व विनय को किस प्रकार से समझ सकते हैं?

दादाश्री : सार और असार दोनों को अलग करना, उसे विवेक कहते हैं। संसार को सार माननेवाले सभी अविवेकी कहलाते हैं। सार को सार माननेवाले विवेकी कहलाते हैं और असार में से सार निकालनेवाले सद्विवेकी कहलाते हैं। इन सब संसारी चीज़ों के लिए विवेक और मोक्ष के लिए विनय चाहिए।

प्रश्नकर्ता : विवेक और विनय में क्या अंतर है?

दादाश्री : सामान्य तौर पर विवेक तो व्यवहार में या भौतिक में माना जाता है। व्यवहार चलाने के लिए जो सोच-समझकर किया जाए, उसे विवेक कहा जाता है। सामनेवाले को दु:ख न हो। जैसी होनी चाहिए वैसी सेटिंग करें तो व्यवहार में विवेक कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : गुजराती भाषा में विवेक अर्थात् अच्छे-बुरे को परखना।

दादाश्री : हाँ, वह सब भौतिक में, अध्यात्म में नहीं। अच्छे-बुरे को परखना, हिताहित को परखना, वह विवेक है।

विवेक में परम विवेक नहीं होता, सिर्फ विवेक ही होता है। सद्विवेक ही विवेक कहलाता है। सद्विवेक का मतलब क्या है? हर एक जीव के प्रति हेतुपूर्वक व्यवहार करना यानी कि ऐसा विवेक रखना कि इससे दु:ख हो जाएगा, क्योंकि हर एक जीव सुख की इच्छा से बरतता है, सुख ही ढूँढता है, दु:ख पसंद नहीं है। जो आत्मा के लिए किया जाए, वह सद्विवेक है। खुद के परलोक के लिए, आत्मा के लिए वह सद्विवेक कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : हम समझते हैं कि हम विनय में हैं लेकिन लोग ऐसा देखते हैं कि इसमें विनय नहीं है। व्यवहार में तो लोग विनय चाहते हैं न?

दादाश्री : वह सब विवेक कहलाता है।

भौतिक के लिए विवेक और धर्म के लिए विनय

प्रश्नकर्ता : तो विनय क्या है? तौर-तरीके ठीक हों तो, उसे हम विनय कहते हैं।

दादाश्री : हाँ, ठीक है। तौर तरीके तो निम्न (सामान्य व्यवहार) भाषा में उपयोग किया जाता है। विनय धर्म के लिए है। विनय आत्मा के लिए और अध्यात्म के लिए है और विवेक भौतिक के लिए है। व्यवहार में विनय नहीं होता। लोग विवेक के बजाय विनय कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : विनय तो हम कई लोगों में देखते हैं।

दादाश्री : वह विनय नहीं है। संसार में लोग जिसे विनय कहते हैं, वास्तव में वह विनय नहीं कहलाता, उसे विवेक कहते हैं। लोगों को समझ नहीं है न इसलिए कुछ भी कह देते हैं। विवेक रहता है, वह भी अच्छे, उच्च प्रकार के लोगों में। उसमें भी फिर सद्विवेक पाना तो बहुत दुर्लभ है। विनय भी सब लोगों में तो होता ही नहीं है। वह तो धर्म में आने के बाद विनय की शुरुआत होती है।

विवेक जागता है कुदरती क्रम से

धीरे-धीरे, क्षण प्रति क्षण विवेक जागना चाहिए। पहले विवेक जागना चाहिए, फिर धीरे-धीरे सद्विवेक जागेगा। सद्विवेक के बाद फिर धीरे-धीरे विनय जागेगा, फिर परम विनय जागेगा। यों जैसे-जैसे टकराते हुए, मार खाते हुए आए वैसे-वैसे जागना चाहिए। अभी अगर फोरेनर्स को

ज्ञान दें, तो कुछ फायदा नहीं होगा। वह तो, हम लोगों के कहने पर यों ही दे देते हैं। या फिर कोई जीव ऐसा हो जिसने यहाँ से जाकर वहाँ जन्म लिया हो, वह अलग बात है, वर्ना फल नहीं मिलता क्योंकि विवेक नहीं जागा है न! अभी तो कितने ही जन्मों तक टकराएगा, उसके बाद इसकी ज़रूरत है। यह तो ऐसी बात है जैसे दो साल के बच्चे की शादी करवाकर उससे बच्चे की उम्मीद रखी जाए।

विवेक से परम विनय तक के स्पष्टीकरण

प्रश्नकर्ता : विवेक, सद्विवेक, विनय और परम विनय के बीच का अंतर समझाइए।

दादाश्री : व्यवहार चलाने के लिए विवेक की ज़रूरत है। विवेक अर्थात् सही-गलत को अलग करना। सद्विवेक अर्थात् जो सही (अच्छे) को ग्रहण करवाए वह। विनय धर्म के लिए है। विनय यानी धर्म के अनुसार चलता है। उससे आगे जाकर परम विनय। परम विनय तो प्रज्ञा उत्पन्न होने के बाद ही आता है। मतलब कि जो दिखाई देता है, उस तरफ का आदरभाव नहीं बल्कि जो नहीं दिखाई दे रहा है, उस तरफ का आदरभाव!

मोक्ष मार्ग क्या है? विवेक से सद्विवेक, सद्विवेक से विनय, विनय से परम विनय और परम विनय से मोक्ष!

परीक्षण बुद्धि का और निरीक्षण 'खुद' का

प्रश्नकर्ता : अच्छे-बुरे का विवेक दिखाए, जिसमें परखने की शक्ति हो, उसे बुद्धि कहते हैं?

दादाश्री : हाँ, यानी कुछ प्रकाश देता है। किसी भी प्रकार का प्रकाश और उसे हम परख सकते हैं तो वह बुद्धि कहलाती है और वह हमें डिसाइड (तय) करना सिखलाती है। बुद्धि डिसिज़न (निर्णय) देती है लेकिन परख सके तो डिसिज़न देगी न? बगैर परखे डिसिज़न कैसे देगी? तो क्या बुद्धि के पास प्रकाश देने के लिए अन्य कोई हथियार है?

प्रश्नकर्ता : है न। मनुष्य जन्म की अगर सब से बड़ी देन है तो वह निरीक्षण शक्ति ही है न?

दादाश्री : हाँ, अन्य किसी में वह नहीं है।

प्रश्नकर्ता : निरीक्षण में बुद्धि नहीं होती?

दादाश्री : नहीं। निरीक्षण में बुद्धि नहीं है। परीक्षण में बुद्धि है। निरीक्षण तो बहुत उत्तम चीज़ है। निरीक्षण में, (तो) आप जो काम कर रहे हैं, उसे 'देखते' ही रहना है। इन सब की देखभाल करते रहना है। किसी को धमकाना वगैरह ऐसा कुछ भी नहीं करना होता। सुप्रिन्टेन्डेन्टपना, सिर्फ 'देखना' व 'जानना', बस। अन्य कोई झंझट नहीं करनी है।

एक ही *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) को 'देखना' है। चंदूभाई का मन क्या कर रहा है, बुद्धि क्या कर रही है, चित्त क्या कर रहा है, चंदूभाई क्या-क्या कर रहे हैं, निरंतर सब का निरीक्षण करना वह अर्थात् क्या? वही कमप्लीट (संपूर्ण) शुद्धात्मा!

बुद्धि से विवेक और विनय, ज्ञान से परम विनय

प्रश्नकर्ता : बुद्धि से ही विवेक उत्पन्न होता है या साहजिक हो सकता है?

दादाश्री : हाँ, बुद्धि के बगैर नहीं हो सकता। बुद्धि के प्रकाश से विवेक है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि के प्रकाश से (विवेक) और विनय?

दादाश्री : विनय भी बुद्धि के प्रकाश से है और परम विनय ज्ञान के प्रकाश से।

स्थितप्रज्ञ, अहंकार सहित

प्रश्नकर्ता : (दादा, क्या विवेक को स्थितप्रज्ञ दशा कह सकते हैं?)

दादाश्री : जो बुद्धि अहंकार की उपस्थिति (मौजूदगी) में संसार का सार-असार निकालकर स्थिर हो गई है, वह है स्थितप्रज्ञ। स्थितप्रज्ञ दशा का समावेश विवेक में ही होता है। वह सार-असार का विवेक समझता है।

संसार का सार-असार निकाला इसलिए अब वीतरागता की ओर बढ़ा। उसने सार निकाल लिया कि इसमें सुख नहीं है लेकिन अहंकार की उपस्थिति में। अब यहाँ पर (अक्रम) उसे आगे बढ़ने का रास्ता मिल गया है, शुरुआत हो गई है। अब अपने यहाँ (अक्रम मार्ग में)स्थितप्रज्ञ नहीं, प्रज्ञा है। अर्थात् स्थितप्रज्ञ अहंकार सहित होता है। लेकिन व्यवहार बहुत सुंदर होता है। जबकि यह प्रज्ञा अहंकार रहित होती है। इसलिए (क्रमिकमार्ग में) स्थितप्रज्ञ होने के बाद में, बहुत काल बीत जाने के बाद वह 'वस्तु' (आत्मा) को प्राप्त करता है।

स्थितप्रज्ञा दशा वह विवेकवाली

प्रश्नकर्ता : यह जो स्थितप्रज्ञ की बात है, उसे ज़रा और विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : वह तो जब व्यक्ति शास्त्रों का बहुत अध्ययन करे, संतों की सेवा करे, व्यापार में तनतोड़ मेहनत करे और व्यापार में नुकसान आए, ऐसे सभी प्रकार के अनुभवों में से होकर निकले और आगे जा कर फिर जब बुद्धि स्थिर हो जाए, तब स्थितप्रज्ञ कहलाता है। उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। इस तरफ से हवा आए तब भी नहीं हिलता, उस तरफ से आए तब भी नहीं हिलता, वैसी स्थिर बुद्धि हो तब स्थितप्रज्ञ कहलाता है। स्थितप्रज्ञ दशा, वह बहुत ही सद्विवेकवाली जागृति दशा है। वह अनुभव लेते-लेते आगे बढ़ता है। जनक विदेही की दशा स्थितप्रज्ञ दशा से उत्तम थी। स्थितप्रज्ञ दशा की तुलना में, प्रज्ञाशक्ति बहुत उच्च प्रकार की है। स्थितप्रज्ञ दशावाला तो व्यवहार में सवोत्तम होता है और जिसे लोगों की ओर से निंदा जैसी चीज़ न हो, वह अपने आप को स्थितप्रज्ञ मान सकता है। लेकिन प्रज्ञा तो मोक्ष में ही ले जाती है। स्थितप्रज्ञवाले को तो मोक्ष में जाने के लिए अभी आगे और मार्ग पार करने की ज़रूरत पड़ेगी।

हर कहीं विवेक रखना, वह है जागृति

विवेक मतलब जागृति रखो कि इसमें सार (तारण) क्या है? क्या देखने लायक है? क्या देखने लायक नहीं है? कहाँ पर विशेषत: देखने जैसा है? कहाँ पर विशेषत: देखने जैसा नहीं है? सभी जगह विवेक रखना, वह है जागृति।

प्रश्नकर्ता : अगर ऐसा कहे कि नहीं देखना है तो उसमें निषेध आ गया न?

दादाश्री : निषेध का तो ऐसा है न, जो हितकारी नहीं है उसे देखने से क्या फायदा होगा? विवेक कब तक रखना है कि जब तक शुभ और अशुभ में पड़ा है, तब तक विवेक रखना है। पूरे जगत् का मार्ग कौन सा है? रिलेटिव मार्ग, शुभ-अशुभ का, अशुभ में से शुभ में आना। उसी को विवेक रखने की ज़रूरत है। जिसे शुद्ध उपयोग हो गया है, वह पूरा ज्ञानी ही हो गया। फिर उसके लिए विवेक क्या? उसे तो स्त्री में आत्मा ही दिखाई देता है जबकि औरों के लिए तो जोखिम है। (इसलिए कहा है) कि 'स्त्री को देखते समय तू बीच में विवेक रखना।' बाघ देखते समय यदि विवेक नहीं रखे और वहाँ से भागे नहीं तो क्या होगा? साँप देखते समय, विवेक नहीं रखे तो क्या होगा? उसी तरह स्त्री देखते समय विवेक रखना चाहिए। देखते समय विवेक रखना चाहिए।

प्रतिक्षण 'स्वयं' के हिताहित का भान रहना चाहिए। 'स्वयं' कौन है उसका और व्यवहार के हिताहित, दोनों का ही भान रखना है। 'स्वयं' अर्थात् आत्मा तो कभी भी दगा देनेवाला है ही नहीं। सिर्फ व्यवहार ही दगाबाज है और दगा है इसलिए वहाँ पर बहुत सावधान रहना और हिताहित का भान अवश्य ररखना। कोई खटमल मारने की दवाई नहीं पीता, ऐसी दवाई पीने का शौक तो रखता होगा क्या? प्रत्येक को अपने हिताहित का तो स्वतंत्र भान होना ही चाहिए कि क्या करने से मैं सुखी और क्या करने से मैं दु:खी हो सकता हूँ।

सार-असार का विवेक व्यवहार में

कुछ तो समझना पड़ेगा न? हमें अपने सुख के लिए रास्ता (उपाय) खोज निकालना है। वह भी विवेकपूर्वक करना है। सार-असार का विवेक देखकर करना है।

बच्चों के साथ सुपरफ्लुअस(नाटकीय) रहना है। असल में तो खुद का कोई है ही नहीं। इस देह के आधार पर मेरे हैं। जब शरीर जलता है, तब क्या कोई साथ में आता है? यह तो जो 'मेरा' कहकर छाती से चिपकाते हैं, उन्हें बहुत परेशानी है। बहुत भावुकतावाले विचार काम नहीं आते। बेटा व्यवहार से है। अगर बेटा जल जाए तो इलाज करवाना, लेकिन आपने क्या रोने की शर्त रखी है?

बच्चों को पाँच वर्ष तक टोकना पड़ता है, फिर टोकना भी नहीं चाहिए और बीस साल के बाद तो उसकी पत्नी ही उसे सुधारेगी। आपको नहीं सुधारना है।

समय के अनुसार समन्वय साधो

प्रश्नकर्ता : (दादा घर में) बाकी सभी बातों में बच्चे ठीक हैं लेकिन छोटे-बड़े का जो विनय रहना चाहिए वह ठीक नहीं है। छोटे-बड़ों का विवेक रखें, ऐसा कुछ कीजिए।

दादाश्री : अगर माँ-बाप मॉर्डन बन जाएँ तो फिर परेशानी नहीं होगी लेकिन मॉर्डन बनते नहीं हैं न? या फिर बच्चे पुराने तौर-तरीके स्वीकार कर लें तो परेशानी नहीं होगी लेकिन वे भी स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।

वास्तव में नियम क्या कहता है कि लोगों को काल के हिसाब से रहना चाहिए। अर्थात् फादर को बदलना चाहिए। हाँ, हम तो बिल्कुल बदल गए हैं। आप चाहे मुंबई की कैसी भी होटल में जाएँ लेकिन हम आपसे ऐसा नहीं कहते हैं कि 'ऐसा नहीं करना चाहिए।' ऐसा समय आ गया तो हम बदल गए। मैं कहाँ रोज़ ऐसे मतभेद करता रहूँ? बदलते समय के अनुसार चलो। जहाँ जो हो, उसके अनुसार बोलना चाहिए। आजकल यह मुद्रा चल रही है और हम कहें कि 'हम ये पैसे लेने नहीं आए, कलदार है तो दे, वर्ना नहीं चाहिए।' और तब हम कहें कि, 'दो रत्ती-(पाउन्ड) ही दो तो वह हम से कहेगा, 'यह पागल है, यह मूर्ख है।' जिस समय जो मुद्रा चल रही हो उसे एक्सेप्ट कर लेना चाहिए। अर्थात् हमें पुराने रीति-रिवाजों को छोड़कर मॉर्डन बन जाना चाहिए।

व्यवहार में रखो छोटे-बड़े का विवेक

दादाश्री : अभी तो जितना हो सके उतना समझाकर काम लेना चाहिए, मार-पीटकर कुछ नहीं होनेवाला। बच्चों को मार-पीटकर हैंडल नहीं कर सकते। मार-पीटकर कुछ होगा? पहले जब सात-आठ साल के थे तब मार-पीटकर हैंडल कर सकते थे।

प्रश्नकर्ता : दादा, उसका बरताव सुधार जाए न, तो मुझे शांति हो जाएगी।

दादाश्री : बरताव? किस बात में खराब है?

प्रश्नकर्ता : माँ-बाप के साथ जो विनय व विवेक होना चाहिए न, वह बिल्कुल भी नहीं है।

दादाश्री : वह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए। सौ प्रतिशत गलत है, नहीं चलेगा। उच्च प्रकार का विनयी वर्तन होना चाहिए। माँ-बाप का उपकार कैसे भूल सकते हैं? उपकार नहीं भूलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : (लेकिन दादा) कई बार वे (मम्मी) ऐसे शब्द कह देती हैं कि मुझे बहुत दुःख हो जाता है। इसीलिए फिर पूरे दिन मुझे घबराहट होती रहती है।

दादाश्री : इस तरह नोट डाउन मत करना। मदर जो कहती हैं, वह रिकॉर्ड बोल रही है ज्ञानपूर्वक नोट करना चाहिए। मार डाले तो मर जाना लेकिन माँ-बाप का विनय-विवेक नहीं तोड़ना चाहिए। इसमें ऐसा नहीं चलेगा।

विवेक चूक जाने पर ज़रूरत है प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : मैं एक्सेप्ट करता हूँ कि बेटे के तौर पर मेरा विनय-विवेक ठीक नहीं है। लेकिन संयोग ऐसे आ जाते हैं कि बोल निकल जाते हैं, मेरी ऐसी इच्छा नहीं है और फिर उसका प्रतिक्रमण भी कर लेता हूँ, लेकिन कभी-कभी ऐसा हो जाता है।

दादाश्री : उसके लिए तो तुरंत माफी माँग लेनी चाहिए। बोल निकल जाते हैं, लेकिन अपना 'ज्ञान' हाज़िर हो जाए। कुछ भूल हुई कि तुरंत माफी माँग लेनी चाहिए कि 'ऐसा बोल दिया वह भूल हो गई।' मम्मी से कहना चाहिए कि 'दोबारा ऐसी भूल नहीं करूँगा।' उन्हें बुरा लगता है कि क्या हमारी तालीम ऐसी होगी? इसलिए अब अगर तेरे शब्द निकल जाएँ, तो उसके पीछे अपना ज्ञान है इसलिए तुरंत माफी माँग लेना ताकि इन्हें आघात न लगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा की उपस्थिति में माफी माँगता हूँ।

दादाश्री : बस तेरा काम हो गया। बस।

बड़ी जातियों में मारते हैं बाण, वचन से

लोग घर में लाठी से मारते हैं? लाठी से या धौल नहीं लगाते? निम्न जाति में हाथ से या लाठी से मारा-मारी करते हैं। उच्चतम जाति में लाठी से नहीं मारते बल्कि वचनबाण ही मारते रहते हैं। संस्कारी लोग यों तो बहुत विवेकी हैं, इसलिए कोई मारते नहीं हैं बल्कि वचन से बाण मारते हैं कि, 'तू ऐसी है और तू वैसी है।' फिर वह कहेगी, 'आप ऐसे और आप वैसे।' ऐसे बाण मारते हैं और उनसे भी ज़रा उच्चतम जाति के हैं न, वे वचनबद्ध कर देते हैं। हिंदुस्तान में वैसा उच्च प्रकार का माल भी है। सामनेवाला बाण मारे तो वह खुद नहीं मारता। उसे लगता है कि इससे क्या फायदा होगा?

बाकी वचन से बाण मारते हैं? वचन की चोट लगती है क्या?

प्रश्नकर्ता : लगती है, ज़रूर लगती है। वचन का असर तो होता है, बल्कि ज़्यादा होता है, जख्म जल्दी नहीं भरते।

दादाश्री : हाँ, लाठी से मारे तो वह जख्म तो दो-चार दिनों में भर जाते हैं और बगैर छूए, ये वचन के बाण के जख्म तो भरते ही नहीं हैं। वचन के बाण से रात में नींद नहीं आती।

विवेकपूर्वक हो तो वाणी सुधरेगी

अगर वाणी सुधारनी है तो ऐसी वाणी (बोलना) बंद कर दो जो लोगों को पसंद न आए। अगर किसी की गलती न निकाली जाए व टकराव टाला जाए तो भी वाणी सुधर जाती है।

प्रश्नकर्ता : फिर तो कुछ बोलना ही नहीं रहा न! वाणी ही नहीं रही न?

दादाश्री : अगर हमारे कहे अनुसार चले न तो वाणी सुधर जाएगी। उसमें फिर बीच में अपनी खुद की समझ के अनुसार वाणी से चोट पहुँचाता है इसलिए फिर टकराव हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले को सावधान करने के लिए कई बार यूज़फुल (उपयोगी) बोल देता है।

दादाश्री : हाँ, सामनेवाले को सावधान करने के लिए बोलते हैं लेकिन लोगों को पसंद नहीं आता न! इसलिए विवेकपूर्वक होना चाहिए।

व्यापार में चाहिए विवेक बुद्धि

व्यापारी भी जब दूसरों के पास माल लेने जाते हैं, तब हमेशा विनय रखते हैं या नहीं? आपमें अक्ल नहीं है और माल बेचने बैठे हो? ऐसा कहेंगे तो उस व्यापारी से फायदा मिलेगा? अच्छी तरह से व्यापार करने का तरीका होता है। सामनेवाले के साथ सौदा करने का तरीका होता है। तरीका होता है या नहीं? किस तरह से करना चाहिए भाई?

प्रश्नकर्ता : विनय-विवेक रखना चाहिए।

दादाश्री : अर्थात् विवेक और विनय दो चीज़ें होनी चाहिए, तो आप इंसान कहलाएँगे। वर्ना जहाँ विनय-विवेक नहीं हैं, वहाँ इंसान कहलाएँगे ही नहीं न!

भगवान ने कहा है कि यदि सच्चा व्यापारी है तो रोज़ बहीखाता लिखना और शाम को सार निकालना, बारह महीने के बाद बहीखाते लिखते हैं तो फिर क्या याद रहेगा? क्या कोई भी रकम याद रहती है? भगवान ने कहा था कि सच्चा व्यापारी बनना और रोज़ की बही रोज़ लिखना और बही में कुछ भूल हुई, अविनय हुआ तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना, उसे चोखा कर देना।

पैसे वापस लेते समय भी विवेक होना चाहिए

प्रश्नकर्ता : किसी व्यक्ति को हमें रुपये वापस देने हों। हमने उसे दिए हों और वे हमें उससे वापस लेने हों और वह नहीं दे रहा तो उस समय हमें वापस लेने के लिए प्रयत्न करने चाहिए या फिर अपना उधार चुक गया ऐसा समझकर संतुष्ट होकर बैठे रहना चाहिए?

दादाश्री : ऐसा नहीं, व्यक्ति अगर अच्छा हो तो प्रयत्न करना और कमज़ोर व्यक्ति हो तो प्रयत्न ही छोड़ देना।

प्रश्नकर्ता : प्रयत्न करना अथवा तो ऐसा कि भाई, हमें मिलना होगा तो वह घर बैठे दे जाएगा और यदि नहीं आए तो समझ लेना कि अपना उधार चुकता हो गया ऐसा मान लेना?

दादाश्री : नहीं, नहीं, इतना सब मत मानना। हमें स्वभाविक प्रयत्न करना चाहिए। हमें उससे कहना चाहिए कि, 'हमें ज़रा पैसों की कमी है यदि आपके पास हैं तो हमें भिजवा देना।' लेनेवाला जितना विवेक रखता है, उतना विवेक हमें रखना चाहिए। पैसे लेते समय वह जितना विवेक रखता है उतना ही विवेक हमें पैसे वापस लेते समय रखना चाहिए। यह तो पैसे लेते समय हमें यह ख्याल में रहता है कि 'पैसे तो मैंने उधार दिए हैं।' ऐसा जिसे याद रहता है उसे बहुत नुकसान है। लेकिन हम प्रयत्न ही नहीं करेंगे तो वह हमें मूर्ख मानेगा और वह उल्टे रास्ते चढ़ेगा।

बाकी, पैसों का महत्त्व नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि अपना मन कमज़ोर नहीं पड़ना चाहिए। हमें एक दिन विचार आए कि, 'ये पैसे नहीं देगा तो क्या होगा?' उसस फिर अपना मन ही कमज़ोर

होता जाता है। यानी देने के बाद हमें नक्की करना चाहिए कि समुद्र में काले कपड़े में बाँधकर फेंक रहे हैं। फिर वापसी की आशा रखनी चाहिए? तो देने से पहले ही आशा रखे बगैर दो, नहीं तो देना मत।

झगड़ा करने में भी विवेक

आजकल (जगत्) पूरा उलझा हुआ है इसलिए (किसी को) छेड़ना मत। ये सामान उठानेवाले ज़्यादा पैसे माँगते हैं न, कोई व्यक्ति तो पीछे पड़ जाता है कि 'इतने पैसे तो देने ही पड़ेंगे।' अगर हम उससे कहें कि, 'भाई ज़रा भगवान का तो डर रख।' तो वह कहेगा कि, 'भगवान का डर क्या रखूँ।' अगर दो रुपये नहीं लूँगा तो खाऊँगा क्या? तब फिर उससे कहना कि, ले भाई, ये दो रुपये और ऊपर से ये दस पैसे।' हम समझ जाते हैं कि आठ आने-(पचास पैसे) का काम था, लेकिन उसने दो रुपये लिए। तो हमें समझ जाना चाहिए कि ऐसा व्यक्ति तो कभी-कभी ही मिलता है, रोज़ ऐसा नहीं मिलता। दूसरे दिन ढूँढने पर भी वैसा नहीं मिलेगा। मज़दूर ही कहेंगे कि, 'चाचा दो रुपये कहीं लिए जाते होंगे?' यानी कभी-कभी दो रुपयेवाला मिल जाता है, कभी डेढ़ रुपयेवाला मिल जाता है और कभी आठ आनेवाला भी मिल जाता है। हमें वह क्यों मिल गया? यह हमारा इनाम है, इसलिए उसे दे दो।

किसी को ज़रा सा भी मत छेड़ना क्योंकि सब भभक रहा है। यों ऊपरी तौर पर ऐसा लगता है कि कुछ नहीं जला है, भभक नहीं रहा है, लेकिन अंदर धुँआ उठ रहा है। ज़रा सी ऊँगली लगी कि भभक जाएगा। इसलिए इस काल में किसी से किसी भी प्रकार की किच-किच मत करना। बहुत जोखिमदारीवाला काल है। सामनेवाला गुस्सा हो जाए न तब कहना, 'भाई हमें भी व्यापार करना है न, फिर हम क्या खाएँगे?' ज्यों-त्यों करके समझा-बुझाकर काम निकलवाने जैसा वक्त है। सिर्फ गरम लोहे पर ही हथौड़ा मार सकते हैं, अन्य कहीं भी नहीं मार सकते। गरम लोहे पर नहीं मारेंगे तो भी मुश्किल है, उसे गढ़ नहीं पाएँगे और इन जीते जागते लोगों को तो ज़रा सा भी हाथ लगाया कि हो गया। फिर भी प्रकृति देख लेनी चाहिए।

विवेकपूर्वक करो व्यवहार

अपने स्थायी नौकर की प्रकृति देख लेनी चाहिए। वहाँ ज़्यादा परेशानी नहीं है। हमें पता है कि वह समझदार है। समझदार के साथ समझदारी की बातें करने में हर्ज नहीं है लेकिन बाहर की पब्लिक से संभलकर रहना चाहिए क्योंकि कौन सा व्यक्ति कब गुस्सा हो जाए, क्या पता? फिर भी वह आप ही से क्यों आ मिला? इसलिए समझा-बुझाकर उससे अलग हो जाना है। इस विचित्र काल की वजह से बेचारा बहुत तनाव में रहता है। अंदर बहुत दुःख होता है इसलिए ज़रा भी छेड़ा कि चाकू मार देता है। कोई सामनेवाले को ज़रूरत से ज़्यादा दुःख कब देता है? जब उससे खुद का दुःख सहन नहीं हो पाता, तभी न?

प्रश्नकर्ता : उसे अपना दुःख तो होगा ही है पर आजकल तो यों राह चलते बात-बात में, बेवजह यों भभक जाता है, यों ज़रा उसे हाथ लग गया कि सीधा मारामारी पर उतर आता है।

दादाश्री : अरे, मारामारी तो क्या वह कुछ अलग ही तरह का कर देता है! अगर मारामारी में से निकल जाओ तो चाकू मार दे। इसलिए उन्हें तो ऐसा कहना पड़ता है कि, 'मेरी वजह से तुझे चोट पहुँची होगी माफ कर देना।' ज्यों-त्यों करके छूट जाना चाहिए। जब जंगली भैंसे लड़ रहे हों तब चाहे राजा हो लेकिन क्या उसे उनके बीच जाना चाहिए? वे भैंसे राजा का मान रखेंगे क्या? आजकल, जंगली भैंसे जैसा ही हो गया है!

इसलिए किसी से भी किच-किच मत करना। और वैसा तो कभी-कभार ही मिलेगा न! अब उसके साथ लड़कर क्या फायदा?

जहाँ लड़ाई-झगड़े हैं, वह 'अंडरडेवेलप्ड' (कम विकसित) प्रजा है। सार निकालना नहीं आता इसलिए लड़ाई-झगड़े होते हैं।

कोर्ट-कचहरी करने में भी विवेक

प्रश्नकर्ता : दादा, अब उससे उल्टा प्रश्न है कि यदि हम कोर्ट में जाने की झंझट न करें लेकिन कोई हमें घसीटकर कोर्ट में ले जाए तो उस वक्त क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपको तो चंदूभाई को ले गए, ऐसा 'देखते' रहना पड़ेगा और यदि चंदूभाई परेशान हो जाएँ, तो चंदूभाई से कहना कि 'क्यों परेशान हो रहे हो? हिसाब चुका दो न! हम शौक़ से नहीं गए हैं, वह ले गया है। यह तो वह खींच ले गया है।'

प्रश्नकर्ता : उसमें उसके भरपूर कषाय हैं।

दादाश्री : हाँ, उसे कषाय हो जाते हैं और यह कषाय रहित, वह तो बात ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : अगर कोई समस्या ही ऐसी हो कि कोर्ट में गए बगैर हल ही न आए तो?

दादाश्री : हाँ, तो जाना पड़ेगा। और कोई रास्ता न हो और आपको किसी के साथ कोर्ट में जाना पड़े तो जाना। तो आप चंदूभाई से कहना कि, 'अच्छा वकील करना ताकि बहुत भाग-दौड़ नहीं करनी पड़े और थोड़ा झूठ बोलना पड़े तो बोलना, लेकिन कोर्ट में ठीक लगे वैसा करना। कोर्ट में पागलों जैसा दिखे, ऐसा मत करना, विवेक की खातिर। सच-झूठ का नियम नहीं है, विवेकपूर्वक करना।' वर्ना लोग पागल कहेंगे कि 'कोर्ट में ऐसा प्रमाण देते होंगे?'

प्रश्नकर्ता : वह तो जहाँ-जहाँ जो-जो योग्य है उस अनुसार करना चाहिए।

दादाश्री : कोर्ट में विवेकपूर्वक का मतलब क्या है? वकील ने कहा हो कि इस अनुसार कहना और वहाँ आप कहो कि 'जो हुआ है मैं वही कहूँगा, और कुछ नहीं कहूँगा।' तो फिर लोग हँसेंगे। अत: आपको वकील के कहे अनुसार कह देना चाहिए। भगवान ने कहा है कि 'सबकुछ करना लेकिन इस तरह कि राग-द्वेष बगैर।' हर एक क्रिया करना, जो क्रिया राग-द्वेष रहित है, उसके जोखिमदार आप नहीं हो। और हमने यह जो विज्ञान दिया है, इस विज्ञान में जो पचास प्रतिशत आज्ञा का पालन करता है, उसे वीतरागता रहती है, हम ऐसा मानते हैं। अर्थात् विवेक की ही बात है।

परेशानी में बरतें विवेक से

प्रश्नकर्ता : पाप के उदय में जीवन पर असर हो जाता है, तब कैसे बरतना चाहिए?

दादाश्री : जब पाप का उदय आए तब पहले तो जॉब (नौकरी) चली जाती है। वाइफ और बेटा, पैसे माँगे कि दो सौ डॉलर दीजिए, तब कलह होती है फिर। यहाँ सर्विस नहीं है और क्या शोर मचाती रहती है बिना बात के? दो सौ-दो सौ डॉलर के खर्चे करने हैं! वहीं सब शुरू होता है। वह भी फिर, रोज़ ही कलह। फिर पत्नी कहती है, 'बैंक में से लाकर नहीं देते हो।' तब फिर बैंक में थोड़ा रहने दें या नहीं रहने दें? यहाँ इसका किराया देना पड़ेगा। बैंक में पैसे नहीं भरने पड़ेंगे? लेकिन पत्नी ऐसी कलह करती है कि दिमाग़ पक जाए। ये सभी लक्षण तो रात को सोने भी नहीं देते, यहाँ अमरीका में कितनों को ऐसा अनुभव होता होगा और कहते भी हैं 'कर्कशा है।' यानी इतने कठोर शब्द बोलता है, छोड़ता नहीं है न? किसी जगह पर होता होगा या बहुत जगहों पर? जिनकी जॉब चली गई हो,

वे मुझे मिलते हैं, 'दादा जॉब चली गई है, क्या करूँ?' पूछता है।

जॉब जाने के बावजूद भी बहुत अच्छी तरह से दिन बिताए, वह व्यक्ति विवेकी कहा जाएगा। नये कपड़े नहीं लाते और पहले के कपड़े ही पहनते हैं। जब तक नौकरी नहीं मिले न, तब तक उतना टाइम गुज़ार लेते हैं। और पतियों को उत्साही रहना चाहिए, जॉब चली जाने पर डरना नहीं चाहिए। इतना घास काटकर या कुछ भी करके, शाम को दस-बीस डॉलर ले आए तो बहुत हो गया। कमी तो नहीं पड़ेगी। जो पत्नी के साथ अच्छी तरह से दिन गुज़ारे, वह विवेकी।

सत्य बोलो, तो भी विवेकपूर्वक

प्रश्नकर्ता : कोई बहुत मीठे और सच बोलनेवाला हो तब, हम ऐसा कहते हैं न कि इसके बजाय भले ही वह खराब बोलता है लेकिन वह अच्छा इंसान है।

दादाश्री : हाँ। सच बोलनेवाला कोई है ही नहीं न।

प्रश्नकर्ता : कई लोग दिल से नहीं कहते कि यह आदमी तो उससे अच्छा है?

दादाश्री : सच बोलनेवाला किसे कहते हैं? एक भाई ने अपनी मदर से सच कहा, बिल्कुल सत्य कहा, अपनी मदर से क्या कहा? कि 'आप मेरे बाप की पत्नी हैं', तो क्या यह सत्य नहीं है? तब मदर ने क्या कहा? मुझे वापस तेरा चेहरा मत दिखाना, तू चला जा यहाँ से।! 'मुझे तेरे बाप की पत्नी कह रहा है!'

अर्थात् ज्ञानीपुरुष से सब समझ लेना चाहिए, वर्ना हम अपना चलाते रहेंगे कि सत्य है, सत्य है? तो कहीं ऐसा बोला जाता होगा? अरे, राह चलते हुए किसी बुर्ज़ुग महिला को कहें ' ऐ बुढ़िया यहाँ आ' तो वह चिढ़ जाएगी कि 'अरे! मुझे बुढ़िया कह रहा है' और अगर हम कहें कि 'माता जी आइए' तो खुश हो जाएँगी। भगवान ने कहा है कि 'बोलने में विवेक रखना, विनय रखना।' विवेकपूर्वक बोलना चाहिए। बिना विवेक के नहीं बोलना चाहिए, जोखिमदारी है। सूरत की कोर्ट में एक वकील ने ऐसा कहा कि, 'माइ ओनरेबल जज इज डोज़िग।' (मेरे माननीय जज साहब झोंके खा रहे हैं) अब वे खीर खाकर आए थे इसलिए ज़रा झोंका आ गया, तो क्या कोई गुनाह हो गया? अब उनसे हम न्याय चाहते हैं। अब वह जज इतने साफ दिल इंसान कि उस दिन तो गुस्सा नहीं हुए। उस दिन तो साहब ने खुश होकर बातें की लेकिन अंत में जजमेंट में (उल्टा,) मार दिया। क्योंकि उन्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए। विवेक रहना चाहिए। 'मेरे बाप की पत्नी' अगर ऐसा कहें तो क्या वह सत्य नहीं है?

प्रश्नकर्ता : एक तरह से देखें तो सत्य ही है।

दादाश्री : तो फिर लोग क्यों नहीं कहते? क्या वह वास्तविक सत्य नहीं है? तो कभी कहकर देखना कि क्या होता है? इसलिए सयाने पुरुषों ने कहा है कि 'नेकेड (नग्न) सत्य, नंगा सत्य मत बोलना। सत्य को कपड़े पहनाकर बोलना।'

अव्यवहारिक नियम में ज़रूरत विवेक की

एक वृद्ध महाराज उपाश्रय में चार्तुमास करने गए थे। वे बेचारे बहुत वृद्ध और पैर से लँगड़ाते थे। उनसे चला ही नहीं जाता था। जब चार्तुमास पूरा हुआ तब उनसे कहा गया कि, 'आप अब विहार कर जाइए।' महाराज का पैर ठीक हुआ ही नहीं था, इसलिए उन्होंने ठहरने के लिए एक्स्टेन्शन माँगा। तब संघपति ने कहा कि, 'अधिक से अधिक जितना दिया जा सके उतना

दे दिया है, अब आगे एक्स्टेन्शन नहीं मिलेगा।' अब महाराज को तो अनिवार्य रूप से जाना ही पड़े, ऐसा हो गया। तो महाराज ने कहा, 'ठीक है, तब मैं चला जाऊँगा। यहाँ से चार मील दूर छाणी गाँव है, वहाँ विहार कर जाऊँगा लेकिन चार मील मुझ से चला जा सके ऐसा नहीं है, तो डोली की व्यवस्था कर दीजिए।' तब संघपति ने कहा कि, 'आज तक ऐसी डोली हमने किसी के लिए करके दी हो ऐसा याद नहीं है।' तब उन्होंने फिर पिछले सब रिकॉर्ड देखें, हिसाब की किताबें देखीं, उनकी नियम की किताबें उठाई, लेकिन कहीं भी उन्हें ऐसा मिला ही नहीं कि पैर से लँगड़ाने के कारण किसी महाराज के लिए डोली की व्यवस्था करनी पड़ी हो! इसलिए उन्होंने तो महाराज से कहा कि, 'ऐसा कोई नियम बनाया ही नहीं गया है तो हम क्या करें!' नियम कैसे तोड़ें? अरे, क्या सभी पैर से लंगड़ाते हैं, जो ऐसा नियम बनाना पड़े? कुछ व्यवहारिक समझ तो चाहिए न कि जड़ की तरह ही नियम को पकड़कर बैठना है?

वे महाराज बेचारे मेरे पास आए और मुझ से कहने लगे, 'भाई, देखो न! इस संघ ने मेरी ऐसी अवदशा की है। 50 रुपये कोई निकालता नहीं और डोली की व्यवस्था करता नहीं, और दूसरी तरफ ऐसा कह रहे हैं, 'विहार कर जाइए, विहार कर जाइए।' क्या करूँ अब मैं? आप ही कोई रास्ता निकालिए।' फिर हमने उनके लिए पैसों की व्यवस्था कर दी। उसके बाद डोली की व्यवस्था हुई और महाराज को बैन्डबाजे बजाकर बिदाई दी गई! बड़ी शोभायात्रा निकाली और संघपति भी सिर पर पगड़ी-वगड़ी लगाकर धूमधाम से महाराज की शोभायात्रा में निकले!

अरे! ये बाजे बजाए और शोभायात्रा का उत्सव किया उसमें 500 रुपये खर्च किए और महाराज के लिए डोली करने के लिए 50 रुपये नहीं खर्च कर सके? कारण क्या? तो कहा, 'शोभायात्रा का नियम तो हमारे पास है लेकिन यह डोली का नियम तो हमारे पिछले इतिहास में भी नहीं है, तब फिर हम ऐसा किस तरह करें?' अब इसे मुझे 'अव्यवहारिकता' नहीं तो और क्या कहना चाहिए?

रहना चाहिए सत्य-असत्य का विवेक

जो इंसान जो चीज़ कर रहा है, उसे वह ठीक ही लगती है। कसाई को भी वह जो कर रहा है, उसमें पाप है, ऐसा नहीं लगता। क्योंकि जो कार्य करे उसका आवरण आ जाता है, उसमें सत्य-असत्य का विवेक चला जाता है। फिर क्या हो? जहाँ सत्य-असत्य का विवेक चला जाए, फिर चाहे कुछ भी करने से, लाख जन्मों तक भी कभी सत्य समझ में नहीं आएगा।'

खुली आँखों से मत सोना

वीतरागों का मार्ग क्या कहता है कि किसी को आप 'वह गलत है' ऐसा कहोगे तो आप ही गलत हो। उसे दृष्टिफेर है, इसलिए उसे वैसा दिखता है। उसमें उसका क्या दोष? कोई अंधा दीवार से टकराए, फिर अंधे को उलाहना दिया जाता होगा कि दिखता क्यों नहीं? अरे, दिखता नहीं था इसलिए ही तो वह टकरा गया। वैसे ही यह पूरी दुनिया खुली आँखों से सो रही है। ये सभी क्रियाएँ हो रही हैं, वे सभी नींद में ही हो रही हैं। स्वप्न में यह सब हो रहा है। और मन में जाने क्या ही मान बैठा है कि हम तो कितनी सारी क्रियाएँ कर रहे हैं। पर ये स्वप्न की क्रियाएँ काम नहीं आएँगी। जागृत की क्रियाओं की ज़रूरत पड़ेगी। ये तो खुली आँखों से सो रहे हैं।

रखो विवेक आत्मार्थे !

अगर हमें मुंबई से ऐसे फाटक (दरवाज़ा,

गेट) के अंदर आना हो, वहाँ कोई पूछे कि 'आप मुंबई से हो या कहीं बाहर से?' बाहरवाले को अंदर आने देते हों और मुंबईवाले को अंदर नहीं आने देते तो वहाँ हमें विवेक रखना पड़ेगा या नहीं रखना पड़ेगा? क्योंकि आत्मा के लिए है, हम यहाँ व्यापार करने और घूमने नहीं आए हैं, देह के लिए नहीं आए हैं। किसलिए आए हैं? एकांत खोजने के लिए, आत्मा के लिए। एकांत का अधिक लाभ लेने के लिए, सत्संग का लाभ लेने आए हैं। अत: वहाँ विवेक से ऐसा कहना पड़ेगा कि 'हम गाँव से आए हैं भाई, आत्मा के लिए।' यह वास्तविकता है, आत्मा के लिए विवेक रखना चाहिए। आत्मार्थ जहाँ हो रहा हो वहाँ विवेक रखकर वह काम कर लेना चाहिए। वहाँ पकड़ नहीं रखनी चाहिए।

अगर हमारे लिए यहाँ चावल रखे हों और इस तरफ अखाद्य पदार्थ रखा हो तो हम में सद्विवेक है इसलिए चावल खा लेते हैं। तब कहते हैं कि 'आपको उसमें रुचि नहीं है न?' मैंने कहा, 'नहीं, अगर तू हमारे मुँह में डाल देगा तो हम तुझ पर राग-द्वेष नहीं करेंगे।' वह ग्रहण करने जैसी चीज़ नहीं है और यह ग्रहण करने जैसी चीज़ है। इस तरह सभी जगह अलग-अलग विवेक रखना चाहिए। यह सारा उधम तो हिंदुस्तान में हो रहा है ऐसा कैसे चलेगा? विवेक होना चाहिए हमेशा।

आदर्श व्यवहार से मोक्ष

आदर्श व्यवहार के बगैर कोई मोक्ष में नहीं जा पाया है। मोक्ष में जाने के लिए आदर्श व्यवहार की ज़रूरत है। आदर्श व्यवहार मतलब किसी भी जीव को किंचित्मात्र दु:ख न हो। घरवाले, बाहरवाले, अड़ौसी-पड़ौसी किसी को भी हम से दु:ख न हो, उसे आदर्श व्यवहार कहते हैं। उतना ही देखना है फिर भी अगर हम से किसी को दु:ख हो जाए तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए।

हम से किसी को भी परेशानी हुई हो, ऐसा नहीं हुआ। किसी के बहीखाते में हमारे द्वारा दी गई परेशानी जमा नहीं होगी। हमें कोई परेशान करे और हम भी उसे परेशान करें तो फिर हम में और आप में क्या फर्क?

हमारा व्यवहार पूर्णत: आदर्श रहता है। आदर्श व्यवहार मतलब जैसा व्यवहार भगवान ने कहा है वैसा व्यवहार रहता है। जो भगवान द्वारा कही गई बात से रत्ती भर भी अलग न हो। सिर्फ इन कपड़ों के अलावा हमारा अन्य कुछ भी अलग नहीं है। जहाँ आदर्श व्यवहार है वहाँ सारे काम हो जाते हैं। व्यवहार आदर्श हुए बिना निश्चय कभी भी आदर्श नहीं हो सकता। जबकि भक्त व्यवहार में बहुत कमज़ोर होते हैं। जब तक साफ व्यवहार नहीं होगा तब तक मोक्ष नहीं है। व्यवहार आदर्श होना चाहिए। जिसके व्यवहार में किसी भी प्रकार की कमी रहेगी, वह मोक्ष के लिए पूरी तरह से लायक नहीं माना जाएगा।

विवेक से पूरा करो, संसार नाटक

प्रश्नकर्ता : नरसिंह मेहता, उनकी पत्नी की मृत्यु हुई तब बोल उठे थे, '*भलु थयुं भांगी जंजाळ*' (भला हुआ छूटा जंजाल) तो वह क्या कहलाएगा?

दादाश्री : पर वे बावले होकर बोल उठे कि '*भलु थयुं भांगी जंजाळ*'। यह बात मन में रखने की है कि 'जंजाल छूट गया।' मन में से वह 'लीकेज' (बाहर निकलना) नहीं होना चाहिए। पर यह तो मन में से 'लीकेज' होकर बाहर निकल गया। मन में रखने की चीज़ ज़ाहिर कर दें, तो वे लोग बावले कहलाएँगे। भक्ति का पागलपन है वह। अपने यहाँ विवेक है।

प्रश्नकर्ता : जो बावले भक्त हैं, उनके मन में जैसा है वैसा ही वाणी में भी निकल जाता है न?

दादाश्री : तभी तो बावले हैं न! जैसा मन में हो वैसा ही कह दें, वे सभी बावले कहलाते हैं। कुछ विवेक होना चाहिए। व्यवहार में विवेक नहीं है वह, ऐसा नहीं बोलना चाहिए। ऐसा कहने पर अगर किसी ने मारा नहीं होता तो हम समझते कि 'भाई, व्यवहार में यह ठीक है।' लेकिन लोगों ने तुरंत मारा कि अरे! ऐसा कह रहे हो? मन में रखो न! मुँह पर क्यों कहा? नागर जाति के बच्चे कहते हैं, 'चाचा, इसे मन में रखना चाहिए। ऐसा बाहर कह दिया, आपकी इज्जत खराब हो गई।'

प्रश्नकर्ता : लेकिन मन में जैसा हो वैसा कह देना ठीक ही है न?

दादाश्री : भक्त तो मन में जैसा हो वैसा कह देते हैं और वैसा ही बरतते हैं। हाँ, यानी वे ऊँची गति में जानेवाले भक्त हैं। ये भक्त कोई ऐसे-वैसे भक्त नहीं हैं। वे तो भगवान प्राप्ति के करीब पहुँच गए हैं लेकिन कहीं ऐसा कहा जाता होगा? मन में समझना चाहिए। मन में हर कोई समझता है कि अच्छा हुआ, चलो शांति हो गई!

ज्ञानी के अभिनय में दिखाई देता है विवेक

'ज्ञानी' बावले नहीं होते। ज्ञानी बहुत समझदार होते हैं। मन में सबकुछ होता है कि 'भला हुआ छूटा जंजाल' लेकिन बाहर क्या कहते हैं? 'अरेरे, बहुत बुरा हुआ यह तो, मैं अकेला अब क्या करूँगा!' ऐसा भी कहते हैं। नाटक करते हैं। यह जगत् तो खुद ही एक नाटक है। इसलिए अंदर जानो कि 'भला हुआ छूटा जंजाल' लेकिन विवेक में रहना चाहिए। ऐसा नहीं कहना है कि 'भला हुआ छूटा जंजाल, सुख से भजेंगे श्री गोपाल।' ऐसा अविवेक तो कोई बाहरवाला भी नहीं करता। दुश्मन हो, फिर भी विवेक से बैठता है, चेहरा शोकवाला बनाकर बैठता है! हमें शोक या और कुछ नहीं होता, फिर भी बाथरूम में जाकर पानी लगाकर, आकर आराम से बैठते हैं। यह अभिनय है। दी वर्ल्ड इज़ दी ड्रामा इटसेल्फ, (संसार स्वयं एक नाटक है) आपको नाटक ही करना है सिर्फ अभिनय ही करना है, लेकिन अभिनय 'सिन्सियरली' करना है।

प्रश्नकर्ता : 'एक्टिंग' वह 'इन्सिन्सियारिटी' नहीं कही जाएगी क्या?

दादाश्री : नहीं। इन्सिन्सियारिटी नहीं कही जाएगी। एक्टिंग मतलब सिर्फ अभिनय। अभिनय होना चाहिए। अभिनय में 'सिन्सियर' ही रहना चाहिए। अब मैं ऐसे में पानी लगाकर बैठूँगा (क्योंकि) मेरा स्वभाव हँसमुख है इसलिए किसी भी बात में मेरा हास्य ही रहता है। अब उसे मैं किस तरह छिपाऊँ? इसलिए थोड़ा सा पानी लगाकर बैठ जाऊँगा। अगर ऐसा नहीं करूँ तो फिर मिर्ची लगानी पड़ेगी। वर्ना नहीं चलेगा। व्यवहार में तो करना ही पड़ेगा।

वैसा हमें आता है। लौकिक बहुत अच्छी तरह से आता है। यह हमें नाटक 'एकज़ेक्ट' करना आता है। यह सब मैं नाटक ही कर रहा हूँ। सुबह से लेकर अब तक नाटक ही कर रहा हूँ। वह भी सिन्सियरली फिर! नाटक करना नहीं है, अदा करना है। रिहर्सल सेट कर लिया हो तो उसे सिर्फ अदा ही करना होता है। तो यह नाटक अदा करने की ज़रूरत है। जगत् में सुपरफ्लुअस रहने की ही ज़रूरत है।

विवेकपूर्वक भूतकाल का करो निकाल

प्रश्नकर्ता : कल सत्संग में ऐसी बात निकली कि भूतकाल याद मत करो और वर्तमान में रहो। अब मुझे हुआ कि भूतकाल याद नहीं करना है पर भूतकाल ऐसा है कि मन और चित्त के सामने एकदम हू बहू आ जाता है। इसलिए भूतकाल तो

ऐसे डंक मारता है कि रोम-रोम में भूतकाल हाज़िर हो जाता है। तो ऐसा लगता है कि भूतकाल को भूलें कैसे?

दादाश्री : ऐसा है न कि आपकी यह क्रिया (फाईलों के साथ के) बैर के *निकाल* (निपटारा) के लिए चल रही है। आपको तो भूतकाल दिखे तो प्रतिक्रमण शुरू हो जाते हैं। भूतकाल को याद किए बिना आपको वह हिसाब दिखाई नहीं देगा न! बाकी ऐसा तो आप जैसे किसी किसी को ही होगा न! ऐसा औरों के साथ नहीं होता है, इसलिए औरों को ऐसा कहते हैं कि 'वर्तमान में रहो' भूतकाल तो, बुद्धिशाली व्यक्ति जो 'ज्ञान' नहीं समझता, वह भी भूतकाल के बारे में नहीं सोचता। भूतकाल के बारे में क्यों नहीं सोचना है? क्योंकि जिसका उपाय ही नहीं है, उसका संकल्प नहीं है। भूतकाल अर्थात् निरुपाय बातें। अत: हम क्या कहते हैं कि ज्ञान प्राप्त किया है इसलिए भूतकाल को याद मत करना। भूतकाल को मूर्ख भी याद नहीं करता तो आपको तो यह 'ज्ञान' प्राप्त हुआ है और भविष्यकाल को 'व्यवस्थित' के अधिकार में सौंप दिया है। इसलिए वर्तमान में रहो, व्यवस्थित पर तो आपको विश्वास हो गया है न? तो फिर भविष्यकाल के लिए आपको कुछ करने को रहा ही नहीं। और आप यह जो भूतकाल को खोदते हो, तब आप अपनी पिछली फाइलों का *निकाल* करते हो इसलिए उसे भूतकाल खोदना नहीं कहेंगे।

प्रश्नकर्ता : जी, अब ठीक है।

दादाश्री : फाइलों का *निकाल* करने के लिए तो भूतकाल खोदना पड़ेगा क्योंकि अगर दुकान बंद कर देनी है तो हमें क्या करना चाहिए? भरा हुआ माल बेचना है और नया माल लेना नहीं है फिर भी इतना विवेक रखना पड़ेगा कि अगर कोई माल नहीं बिक रहा है तो यदि शक्कर खत्म हो गई हो तो फिर दूसरी नई लानी पड़ेगी। अत: यह दुकान विवेकपूर्वक खाली करनी है।

सत्-असत् का विवेक आता है ज्ञान से

सार-असार के विवेक के बगैर वैराग्य आएगा ही नहीं। इस जगत् में सार-असार क्या है! असार के बारे में सोचेगा तभी वैराग्य आएगा न? असार को ऐसा जानो कि असार है तब वैराग्य है और सार-असार का विचार आए तभी पहले विवेक है। विवेक है तभी वैराग्य उत्पन्न होगा। वैराग्य के बेज़मेन्ट के बिना त्याग नहीं टिकेगा। पहले विवेक होना चाहिए। सत्संग से विवेक उत्पन्न होता है और कुसंग से अविवेक उत्पन्न होता है। ये उसके स्टेपिंग्स हैं।

सत्-असत् का विवेक होने पर ही बैराग टिक पाता है। वर्ना बैराग कभी नहीं टिक सकता। सत् असत् का विवेक 'ज्ञान' से आता है।

ज्ञान जानने से यह पता चलता है कि क्या गलत है और क्या सही। जो सत्-असत् का विवेक करवाता है, उस 'विज्ञान' को जानने से मुक्ति होती है। ज्ञान जानने से हिताहित का भान होता है। और विज्ञान अर्थात् जो मुक्ति दिलवाता है।

सत्-असत् का विवेक ज्ञानी की भाषा में

(सत्)(असत्) का विवेक ही समझना है कि *पुद्गल* (असत्) है, वह नाशवंत है। असत् चीज़ नाशवंत है, सत् वस्तु शाश्वत है। जो सत् आत्मा है और वह शाश्वत है। अन्य सभी, यह *पुद्गल* असत् है, विनाशी है। विनाशी की चिंता 'हमें' नहीं करनी है। अविनाशी को विनाशी की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

सत् और असत् का संपूर्ण विवेक तो 'ज्ञानीपुरुष' में ही होता है। जगत् असत् को सत्

मानता है। 'यह सत् ऐसा है और असत् ऐसा है', ऐसा जानना उसे सम्यक् दर्शन कहा है। कुछ लोग स्थूल असत् को सत् कहते हैं। कुछ लोग सूक्ष्म असत् को सत कहते हैं। कुछ लोग सूक्ष्मतर असत् को सत् कहते हैं। कुछ लोग सूक्ष्मतम असत् को सत् कहते हैं। संपूर्ण असत् को जो जानता है वह सत् को जानता है। संपूर्णत: अज्ञान को जान जाए तो उस पार ज्ञान है। कंकड़ को पहचानना आ गया तो गेहूँ को जाना जा सकता है अथवा गेहूँ को जान ले तो कंकड़ को जाना जा सकता है।

अवस्थाएँ असत् हैं, नाशवंत हैं। आत्मा सत् है, अविनाशी है।

हेतु में हिताहित का विवेक और जागृति

आज जगत् को हिताहित का भान ही नहीं है, संसार के हिताहित का कुछ लोगों को भान होता है, क्योंकि बुद्धि के आधार पर कितनों ने वह निश्चित किया होता है लेकिन वह संसारी भान कहलाता है कि संसार में मैं किस तरह सुखी रहूँ। असल में तो यह भी 'करेक्ट' नहीं है। 'करेक्टनेस' तो कब कहलाती है कि जीवन जीने की कला सीखा हो तब। यह वकील बना फिर भी कोई जीवन जीने की कला आई नहीं। तब कोई डॉक्टर बना फिर भी वह कला नहीं आई।

जागृत तो कौन होता है? खुद के हिताहित का भान हो वह। पूरा जगत् मान बैठा है कि 'हिताहित का मुझे भान है,' पर वह हिताहित का भान नहीं कहलाता। खुद का ही अहित कर रहा है। जिस लक्ष्मी को इकट्ठी करने के लिए रात-दिन हिताहित ढूंढता है, वह लोकसंज्ञा है। उसके कारण रात-दिन खा-पीकर पैसों के पीछे ही पड़े रहते हैं। वह देखो न, *'ऑन' का व्यापार* (मूल क़ीमत से ज़्यादा में बेचना) शुरू किया है! इस हिंदुस्तान में तो भला ऑन के व्यापार होते होंगे? छुपकर जो-जो कार्य करते हैं, वह अधोगति है। हिंदुस्तान में पैदा हुआ तो जन्म से ही सांसारिक जागृति कुछ अंशों तक लेकर आया होता है। एक तो सांसारिक जागृति और फिर कलियुग, तो सूझ नहीं पड़ती है। सत्युग हो तब तो सूझ पड़ती है। इन छोटे बच्चों को उनके खिलौनों से संबंधित ही जागृति होती है, वैसे ही इन लोगों को तो पूरे दिन 'इन्कम टैक्स' और 'सेल्स टैक्स' से संबंधित ही, पैसों से संबंधित जागृति ही रहा करती है। हिंदुस्तान के लोगों में कहीं ऐसा होना चाहिए? हिंदुस्तान का मनुष्य यदि पूरी तरह से जागृत हो जाए तो पूरे वर्ल्ड को ऊँगली पर नचा सकता है। ये तो *अणहक्क* (बिना हक़ का) की लक्ष्मी और *अणहक्क* के विषय के पीछे ही पड़े हैं। लेकिन उसे मालूम नहीं कि जाते समय अर्थी निकालते हैं और नामवाला बैंक बेलेन्स सारा कुदरत की जब्ती में चला जाता है। कुदरत की जब्ती मतलब रिफंड भी नहीं मिलता। सरकार ने ले लिया हो तो रिफंड भी मिलता है, पर यह तो कुदरत की जब्ती! इसलिए हमें क्या कर लेना चाहिए? आत्मा का। आत्मा के बारे में भले न समझो पर परलोक का तो करो! परलोक का नहीं बिगड़े, वैसा तो रखो! यह लोक तो बिगड़ा हुआ ही है, उसमें कुछ बरकत है नहीं। हिताहित का भान हो कि मुझे साथ में क्या ले जाना है, इतना ही यदि वह सोचता हो न तो भी काफी है।

जगत् के सभी लोग हेतु रहित की क्रिया करते हैं। हेतु ही तय नहीं होता। हेतु अर्थात् अपना विवेक, सद्विवेक हमेशा बना रहे, उसे हेतु कहते हैं।

हित-अहित किस में, चाहिए उसका विवेक

हमारे पास व्यवहार जागृति तो निरंतर होती है! कोई घड़ी की कंपनी मेरे पास से पैसे नहीं ले

गई है। किसी रेडियोवाले की कंपनी मेरे पास से पैसे नहीं ले गई है। हमने तो खरीदा ही नहीं। इन सबका अर्थ ही क्या है? 'मीनिंगलेस' है। जिस घड़ी ने मुझे परेशान किया, जिसे देखते ही अंदर अत्यंत दु:ख लगे, वह किस काम का? कई बच्चों को तो बाप को देखते ही अंदर द्वेष और चिढ़ होती है। वैसे ही इस घड़ी को देखते ही चिढ़ होती है तो फिर रखो घड़ी को एक तरफ और यह दूसरा यह सब, रेडियो, टी.वी. तो प्रत्यक्ष पागलपन है, प्रत्यक्ष 'मेडनेस' है।

प्रश्नकर्ता : रेडियो-टी.वी. तो घर-घर में हैं।

दादाश्री : वह बात अलग है। जहाँ ज्ञान ही नहीं, वहाँ पर क्या हो? उसे ही मोह कहते हैं न! मोह किसे कहते हैं? बिना ज़रूरत की चीज़ को लाना और ज़रूरत की चीज़ में कमी करना, उसी को मोह कहते हैं।

यह कैसा है, वह बताऊँ? कोई प्याज़ को चीनी की चाशनी में डालकर खाने को दे, वैसा है। अरे, तुझे प्याज़ खाना है या चाशनी खानी है, वह पहले पक्का कर। प्याज़ वह प्याज़ होना चाहिए। नहीं तो प्याज़ खाने का अर्थ ही क्या है? यह तो सारा पागलपन है। खुद का कोई डिसिज़न नहीं, खुद की सूझ नहीं और कुछ भान ही नहीं है! किसी को प्याज़ को चीनी की चाशनी में खाते हुए देखें तो खुद भी खाता है! प्याज़ ऐसी चीज़ है कि चीनी की चाशनी में डाला कि वह यूज़लेस हो जाता है। यानी किसी को भान नहीं है, बिल्कुल बेभानपना है। खुद अपने आपको मन में मानता है कि 'मैं कुछ हूँ' और उसे ना भी कैसे कहा जाए हम से? ये आदिवासी भी मन में समझते हैं कि 'मैं कुछ हूँ।' क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि इन दो गायों और इन दो बैलों का मैं *ऊपरी* (बॉस, मालिक) हूँ! और उन चार जनों का वह *ऊपरी* ही माना जाएगा न? जब उन्हें मारना हो, तब वह मार सकता है, उसका अधिकार है उसे। और किसी का *ऊपरी* न हो तो अंत में पत्नी का तो *ऊपरी* होगा ही। इसे कैसे पहुँच सकेंगे? जहाँ विवेक नहीं, सार-असार का भान नहीं, वहाँ क्या हो? मोक्ष की बात तो जाने दो लेकिन सांसारिक हिताहित का भी भान नहीं है।

नेसेसरी (आवश्यक) चीज़ों में विवेक बनाए रखना

जगत् पूरा 'अन्नेसेसरी' परिग्रह के सागर में डूब गया है। 'नेसेसरी' को भगवान परिग्रह नहीं कहते हैं। इसलिए हर एक को खुद की नेसेसिटी कितनी है यह निश्चित कर लेना चाहिए। इस देह को मुख्य किसकी ज़रूरत है? मुख्य तो हवा की। वह उसे हर क्षण फ्री ऑफ कॉस्ट मिलती ही रहती है। दूसरा, पानी की ज़रूरत है, वह भी उसे फ्री ऑफ कॉस्ट मिलता ही रहता है। फिर ज़रूरत खाने की है। भूख लगी यानी क्या कि फायर हुई, इसीलिए उसे बुझाओ। इस 'फायर' को बुझाने के लिए क्या चाहिए? तब लोग कहते हैं कि 'श्रीखंड, बासुंदी!' अरे नहीं, जो हो वह डाल दे न अंदर। खिचड़ी-कढ़ी डालने से भी वह बुझ जाती है। फिर सेकन्डरी स्टेज की ज़रूरत में पहनने का, रहने का, वह है। जीने के लिए क्या मान की ज़रूरत है? यह तो मान को ढूँढता है और मूर्छित होकर फिरता है। यह सब 'ज्ञानीपुरुष' के पास से जान लेना चाहिए न!

एक दिन यदि नल में चीनी डाला हुआ पानी आए तो लोग ऊब जाएँ। अरे! ऊब गए? तो कहे, 'हाँ, हमें तो सादा पानी ही चाहिए।' ऐसा यदि हो न तो उसे सच्चे की कीमत समझ में आए। लोग तो फेन्टा और कोकाकोला खोजते हैं। अरे, तुझे किसकी ज़रूरत है वह जान ले न! शुद्ध हवा, शुद्ध

पानी और रात को खिचड़ी मिल गई तो यह देह शोर मचाता है? नहीं मचाता। इसलिए ज़रूरतें क्या है, इतना निश्चित कर लो। भगवान ने क्या कहा था कि बाह्य सुख और अंतर सुख के बीच में पाँच-दस प्रतिशत फर्क होगा तो चलेगा, लेकिन यह 90 प्रतिशत का फर्क हो तब तो नहीं चलेगा। अन्नेसेसरी ज़रूरतें खड़ी करी हैं।

अनावश्यक में अविवेक लाता है परेशानी

रोज़बरोज़ और ज़्यादा इस झंझाल से घिरा रहता है। घर में बाग (बगीचा) नहीं था तो लोगों के बाग देखकर खुद भी बाग बनाता है। फिर वहाँ खुदाई करता रहता है, खाद ले आता है, फिर पानी डालता रहता है। उल्टी यह जंजाल बढ़ाता रहता है, भाई! कितनी जंजाल रखने जैसी थी? जिसे आवश्यक कहा जाए उतनी! आवश्यक अर्थात् जिसके बिना नहीं चले। खाएँगे नहीं तो क्या होगा? मनुष्यपन व्यर्थ जाएगा। मतलब ऐसा नहीं कि आप पूरन-पूरी और ऐसा सब खाओ। जो कुछ भी है जैसे कि दाल-चावल या खिचड़ी, लेकिन आवश्यक, सिर्फ इतने तक परवश रहना था। कितने तक? जो आवश्यक है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : अब, अगर खाया तो सिर्फ खाने से थोड़े ही चलेगा? फिर उसका परिणाम आएगा। जो करेंगे उसका रिझल्ट तो आएगा या नहीं आएगा?

अब ऐसा भी नहीं है कि आवश्यकताएँ कम हो सकें। कोई कहेगा, 'मुझे कम करनी हैं लेकिन हो नहीं पातीं। बेटे की पत्नी शोर मचाती है, घर में पत्नी किच-किच करती रहती है।' लेकिन अगर मन में इतना भाव रहे कि 'मुझे कम करनी हैं,' इतना भाव रहे तो भी बहुत हो गया।

जितना ज़्यादा अन्आवश्यक उतनी ज़्यादा परेशानी। आवश्यक भी परेशानी ही है, फिर भी ज़रूरी है इसलिए परेशानी नहीं मानी जाती।

हर एक चीज़, जो आवश्यक है, बिना सोचे सहज हो जानी चाहिए। अपने-आप ही होते रहनी चाहिए। पेशाब करने के लिए राह नहीं देखनी पड़ती, अपने आप ही हो जाती है और वह जगह नहीं देखती। और इन बुद्धिशालियों को तो, जगह भी देखनी पड़ती है। आवश्यक का मतलब तो पेशाब तो लगते ही हो जाए, उसे आवश्यक कहते हैं।

सहजता, विवेक-अविवेक से परे

प्रश्नकर्ता : तो फिर मूत्रालय खोजने में शर्म आती है, वह किसे? वह क्या चीज़ है?

दादाश्री : विवेक रहा ही न! वह सहजता नहीं रहने देता। सहजता में तो विवेक या कुछ भी नहीं होता। सहजता में तो वह खाएगा भी कब कि जब सामनेवाला दे तब, वर्ना माँगता भी नहीं है, विचार भी नहीं, कुछ भी नहीं। और भूख लगी तो उसमें भी तन्मय नहीं।

प्रश्नकर्ता : यह तो बिल्कुल अंतिम दशा की बात है न?

दादाश्री : अंतिम ही न! और नहीं तो क्या? अंतिम दशा (तक पहुँचने) के लिए आगे की दशाएँ हम लाते जाएँ तो वैसी दशा उत्पन्न होगी। लेकिन पहले से ही दुकान बढ़ाते चले हैं तो? अंतिम दशा देर से आएगी।

प्रश्नकर्ता : अंतिम दशा का पिक्चर अगर सामने हो तभी वहाँ तक पहुँच सकेंगे न?

दादाश्री : तभी पहुँच पाते हैं। यह आपको अंतिम दशा का एक पिक्चर दे रहा हूँ।

ज़बरदस्ती प्रयास करनेवाले चूक जाते हैं विवेक

अभी एक भाई ने बात कही थी, 'करो, करो' कह रहे थे न! वे आत्मा या आत्मज्ञान के लिए कह रहे हैं, करो! यानी वे जो 'करो' कह रहे हैं न, लेकिन वे करोड़ों जन्मों तक आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर पाएँगे। आत्मज्ञान सहज है। वह सहज स्थिति उत्पन्न होती है। अत: 'सहज' और 'करो' दोनों को आदिकाल से बैर हैं। बैर है या नहीं?

करने से सहज अवस्था प्राप्त नहीं होगी। वह तो ज्ञानीपुरुष की यों कृपा बरसी कि सहज हो गया तो बात बन गई। जो लोग ऐसा कहते हैं कि 'ऐसा करो और वैसा करो' वे सहज अवस्था से विरुद्ध करवाते हैं। और करनेवाले मन में खुश होते हैं कि 'मैंने ऐसा किया और वैसा किया।' व्यर्थ में भटकने का काम किया!

अत: इंसान को विवेक से समझना चाहिए। पोसिबल (संभव) हो तो चार-साढ़े-चार बजे 'जल्दी उठना चाहिए।' फिर समझकर जो हुआ सो सही। निश्चय रखना है फिर भी जो हुआ सो सही। फिर ऐसे पकड़ नहीं पकड़नी है, ज़बरदस्ती प्रयास नहीं करना है, वीतरागों का मार्ग करने का नहीं है।

या तो सहज या प्रयत्न करना, दो ही होते हैं। मैंने तो लोगों को ज़बरदस्ती प्रयास करते हुए देखा है। मोक्ष के लिए ऐसा होता होगा?

प्रश्नकर्ता : बात को पकड़कर रखे, तो हम समझ जाते हैं कि यह प्रयास कर रहा है।

दादाश्री : हाँ। आत्मा तो कहाँ रह गया और यह बिना दूल्हे की बारात, देखो तो सही? दूल्हा तो अभी आया नहीं है और बारात खाना खाने बैठ गई है!

ज्ञान उसे कहते हैं कि जो इंसान को साहजिक बनाए। शास्त्र में तो 'ऐसा करो और वैसा करो, जप करो और तप करो और फलाँ करो' वगैरह सब होता है। करने की ही कथा कही है। सहज का रास्ता किसी ने दिखाया ही नहीं है। यहाँ बैठने से सहज हो जाएगा या नहीं हो जाएगा? तो सहज बनना है।

व्यवहार में बरतना है विवेकपूर्वक

(अब आपको) दादा की कृपा से सब ठीक हो जाएगा। इसलिए नया जोड़ लेना कि आखिर हम जानते हैं कि, यह बिगड़नेवाला है और सुबह इस दूध की चाय नहीं बनेगी। इसलिए फिर हमें नमक निकालने की क्रिया करनी है, डाला हुआ नमक निकाल देना है। अपना विज्ञान ही ऐसा है कि निकाल फेंकता है। जब पता चले कि उल्टा चल रहा है तो फिर दूसरी मरहम-पट्टियाँ मारकर ठीक कर देना है। खून का बहना रोक देना है और खून निकले तो सामने सौदा हो जाएगा। (यदि सामनेवाले को दु:ख हुआ तो वह दावा करेगा)।

प्रश्नकर्ता : ऐसा हो जाता है। उस व्यक्ति का ऑपरेशन करने जाएँ तो दूसरे 25 को पीछे से परेशानी होने लगती है।

दादाश्री : हाँ। अगर ऐसा हो चुका है। तो यों संभलकर काम लेना है। उसे विवेक कहा जाता है। सही चीज़ भी विवेक से देनी चाहिए। धौल लगाकर नहीं देनी चाहिए। हार्टिली होगा तो सब चलेगा। अत: देख लेना है।

विवेक दृष्टि हाज़िर पक्के निश्चय से

प्रश्नकर्ता : इस विवेक दृष्टि को कैसे विकसित करें?

दादाश्री : हम अगर तय करें कि मुझे विवेक करना ही है, तो ओन द मोमेन्ट विवेक

जागृत होता है। मतलब सीखने की ज़रूरत नहीं पड़ती। 'हमें विवेक रखना है' ऐसा तय रखना चाहिए तो जवाब ओन द मोमेन्ट, अपने आप उस घड़ी हाज़िर हो जाएगा। मुझे हर जगह हाज़िर रहता ही है।

ज्ञानी का विवेक व्यवहार से

धर्म प्राप्त करने की निशानी क्या है कि भगवान को उसकी कीमत नहीं है कि संघपति वहाँ कुर्सी पर बैठे हैं लेकिन और कोई (जगह कर देने के लिए) वहाँ से उठ गया, उसकी कीमत है भगवान को।

और कोई नहीं उठा लेकिन वह उठ गया, तो भगवान ने नोट किया, करेक्ट। तो यह देखना है। पक्षपात ही नहीं। मैं तो मिल मालिक को नीचे बिठा दूँ और उसके ड्राइवर को ऊपर बिठा दूँ। पक्षपात नहीं बल्कि विवेक रहना चाहिए। आत्मा से एक समान लेकिन व्यवहार से विवेक। जो संघ के लिए बहुत उपकारी हैं तो उन्हें बुलाना नहीं पड़ेगा? वे लोग ओनररी हैं, अगर यहाँ आएँ और बहार बैठे रहें, जगह न मिले तो कितना खराब दिखाई देगा? खराब नहीं दिखाई देगा? आप सभी की इज्जत न जाए इसलिए मैं बुलाता हूँ। इसलिए फिर मुझे ही बुलाना पड़ता है। यहाँ अभी कोई भी ऐसा विवेकी नहीं हुआ है, वर्ना वास्तव में ज्ञानी को तो किसी को बुलाना ही नहीं होता न?

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो यह प्रधानमंत्री की बात कही, तो यह चीज़ व्यवहार में किस तरह से पता चलेगी? यह कैसा विवेक है?

दादाश्री : मुझे हर जगह (विवेक) हाज़िर रहता ही है। वे यदि प्रधानमंत्री के तौर पर आएँ तो मैं खड़ा होकर यों सलाम करूँगा और वे यदि कहें कि, 'नहीं, मैं तो दर्शन करने आया हूँ' तब मैं कहूँगा, बैठिए, नीचे बिठाऊँगा लेकिन सभी को हटाकर। पास (बराबर) तो बैठेंगे ही नहीं, कोई नहीं बैठा है मेरे पास।

प्रश्नकर्ता : मोरारजी देसाई भी नहीं बैठे थे। मोरारजी देसाई को बुलाया तब भी बहुत विनय..

दादाश्री : मोरारजी देसाई बहुत विनयी व्यक्ति थे। कहने लगे कि, 'साहब क्यों कह रहे हैं? अब तो मैं प्रधानमंत्री नहीं हूँ।' मैंने कहा, मैं सभी अच्छे लोगों को 'साहब' कहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : नहीं, आपने उनसे कहा कि 'मैं आपकी कुर्सी को साहब नहीं कह रहा, आपके गुणों को कह रहा हूँ।'

दादाश्री : हाँ, हाँ। मैंने कहा था, 'मैं ऐसा नहीं हूँ कि आपकी प्रधानमंत्री की कुर्सी को दाद दूँ। हाँ, आपके गुणों को साहब कह रहा हूँ।' मैं तो हर एक को 'साहब' कहता हूँ न ! मोक्ष में जानेवाले में मुख्यत: विनय गुण होना चाहिए।

व्यवहार में दिखाई देता है भेद लेकिन है विवेक

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञानी के व्यवहार में दो व्यक्तियों के बीच भेद होता है?

दादाश्री : उनकी दृष्टि में भेद है ही नहीं, वीतरागता होती है। उनके व्यवहार में भेद होता है। प्रधानमंत्री आएँ तो उठकर मैं उनका स्वागत करूँ और उन्हें अपने पास बिठाऊँगा। उनके लिए व्यवहार नहीं चूकना चाहिए। उन्हें तो विनयपूर्वक ऊपर बिठाऊँगा और अगर उन्हें मुझ से ज्ञान ग्रहण करना हो तो नीचे मेरे सामने बिठाऊँगा। लोकमान्य को 'व्यवहार' कहा है और मोक्षमान्य को 'निश्चय' कहा है, इसलिए लोकमान्य व्यवहार को उस रूप में 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करना पड़ेगा। अगर हम उन्हें नहीं बुलाएँ तो उन्हें दु:ख होगा, उसकी जोखिमदारी हमारी कहलाएगी।

ज्ञानी का स्व-पर का विवेक बहुत उत्तम होता है।

आत्मा प्राप्त हो जाए तब सभी दखल छूट जाती हैं। वहाँ पर जुदाई नहीं रहती फिर। जुदाई कब तक है? बुद्धि में दखल है तब तक। भेदबुद्धि है तब तक। आत्मदर्शन उसे कहते हैं कि भेदबुद्धि खत्म हो जाए, और अभेदबुद्धि उत्पन्न हो जाए। फिर 'बुद्धि से' अभेदता रहे और व्यवहार हर एक के साथ अलग-अलग रहे। व्यवहार में जो भेद दिखाई देता है उसका क्या कारण है? 'वह तो विवेक है।'

अविवेकी के प्रति भी अपार करुणा

प्रश्नकर्ता : इस दुनिया का कोई ऐसा केस नहीं होगा जो आपके पास नहीं आया होगा। हर तरह के केस आए हैं।

दादाश्री : लेकिन क्या करें? एक-दो लोगों को 'मैंने' मना किया तब 'अंदर' से बोले, 'फिर कौन से अस्पताल में जाएगा यह बेचारा? यहाँ से भी अगर आप निकाल दोगे तो वह कौन से अस्पताल में दाखिल होगा। बाहर किसी अस्पताल में फिट है ही नहीं।' इसलिए फिर मैंने शुरू किया वापस! लेकिन मन में तो ऐसा होता है कि यह क्या झंझट? इसलिए इन्हें धकेल देने का मन होता है लेकिन वापस अंदर से आता है कि 'लेकिन वह जाएगा कहाँ बेचारा? और कौन से अस्पताल में जाएगा? भले ही पागलों जैसा है, बोलना भी नहीं आता, विवेक भी नहीं है, कुछ भी नहीं है, भले ही ऐसा है फिर भी चलने दो!'

प्रश्नकर्ता : यह जो कहते हैं न कि 'चले जाएँ तो अच्छा है' यह कौन सा भाग कहता है? और 'ये बेचारे कहाँ जाएँगे?' यह कौन सा भाग कहता है?

दादाश्री : वह भाग परमात्म भाग है। 'भले ही पागलों जैसा है, अपने साथ अविनय से बात कर रहा है, लेकिन अब वह कहाँ जाएगा?!' परमात्म भाग ऐसा कहता है! और कोई ऐसा अस्पताल नहीं है जो ऐसे माल को रखे। अच्छे को भी नहीं रखते हैं, तो फिर! और रखने के बाद भी उनके पास दवाइयाँ नहीं हैं। उनके पास कूटे हुए चूर्ण हैं। और यहाँ पर कूटे हुए चूर्ण नहीं चलते। यहाँ तो लेई चाहिए, जो चुपड़ते ही ऐसे चिपक जाए!

क्योंकि पूरी दुनिया ऐसे भुन रही है जैसे शक्करकंद को भट्ठी में भूनते हैं। अपने सत्संग का हेतु क्या है? जगत् कल्याण करने का हेतु है। 'ज्ञानीपुरुष' सामनेवाले के कल्याण के लिए क्या नहीं करते?

कैसी अद्भुत कल्याण की भावना!

हम क्या कहते हैं कि इन लोगों के सर्व दुःखों का क्षय करो। ये दुःख हम से देखे नहीं जाते। फिर भी हम में 'इमोशनल'पन नहीं होता है। साथ ही उतने ही वीतराग भी हैं। इसके बावजूद सामनेवाले के दुःख हम से सहन नहीं हो पाते। क्योंकि हम हमारी सहनशक्ति जानते हैं। हम से कैसा दुःख सहन हो पाता था, वह जानते हैं न! तो लोग ऐसा कैसे सहन कर पाते होंगे, उसका हमें पता है और वही कारुण्यता है हमारी!

दादा की इच्छा ऐसी है कि यह जगत्कुछ सही ज्ञान को और कुछ सही मार्ग को प्राप्त करें और शांति प्राप्त करें। कुछ लोग मोक्ष को प्राप्त करें कुछ लोग वीतराग मार्ग को प्राप्त करें और कुछ सही धर्म को प्राप्त करें वही दादा की इच्छा है, अन्य कोई इच्छा नहीं है।

- जय सच्चिदानंद

अंतरसुख - बाह्यसुख

आज का भौतिक विज्ञान 'आउट ऑफ बैलेन्स' हो गया है, 'नोर्मेलिटी' से बाहर चला गया है, इसलिए 'पोइज़न' हो गया है। आज इस भौतिक विज्ञान से अपार बाह्यसुख हो गए हैं, जब कि दूसरी ओर अंतरसुख सूख गया है! अंतरसुख और बाह्यसुख, इन दोनों का कुछ 'इक्वल बैलेन्स' (संतुलन) होना चाहिए। थोड़ा-बहुत कम-ज़्यादा हो गया हो तो चलेगा, पर उसका अनुपात होना चाहिए। भौतिक सुख नीचे गया हो तो चला सकते हैं, पर आज तो आंतरिक सुख खत्म हो गया है। इस अमरीका में तो बिल्कुल खत्म हो गया है। वहाँ की प्रजा को तो बीस-बीस गोलियाँ खाएँ, तब मुश्किल से नींद आती है! अमरीका ने एक तरफ अपार भौतिक सुख प्राप्त किए हैं, जब कि दूसरी तरफ अंतरसुख खत्म हो गया! यह कैसा साइन्स!

मनुष्य अंतरशांति के लिए बाहर भागदौड़ करते हैं, पर इस तरह भागदौड़ से शांति मिलेगी? अंतरशांति हो तभी बाहर शांति मिलेगी। इसलिए पहले अंतर में सुख है वैसा श्रद्धा में आ जाना चाहिए, तब अंतरशांति मिलेगी।

भगवान ने क्या कहा था कि अंतरसुख और बाह्यसुख का काँटा देखते रहना। अंतरसुख कम हो और बाह्यसुख बढ़े तो समझना कि मरनेवाला है। काँटा थोड़ा-बहुत ऊँचा-नीचा हो तो चला सकते हैं, पर यह तो अंतरसुख की डंडी बिल्कुल ऊँची चली गई, तब तेरी क्या दशा होगी? ये बाहर के सुख बढ़ा दिए, चालीस लाख के फ्लेट लिए हों, खाने-पीने का बहुतायत में हो, टोकरे भर-भरकर फ्रूट के हों, तब साहब को ब्लड प्रेशर और हार्ट अटेक आए हुए होते हैं और मेमसाहिब को डायाबिटीज़ हुआ होता है! उन दोनों के मुँह पर डॉक्टर ने सीकी (पशुओं के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली) बाँध दी होती है! फिर यह सब खाए कौन? तब कहें, घर के वे चूहे, नौकर और रसोइये खा-पीकर गोल-मटोल हो गए होते हैं! फ्लेट में जाओ तो जैसे शमशान में नहीं आ गए हों! सेठ के साथ बातें करो तो भी निरे अहंकार से बात करता है वह। सेठ महँगे भाव की चाय पिलाते हैं, पर जब तक भावरूपी द्रव्य नहीं पड़ा है, तब तक चाहे जैसा सोलह आनी का सोना हो, फिर भी बेकार है। सेठ का मुँह देखें तो जैसे कि सेठ हँसना ही भूल गए हों, वैसा लगता है! यह बाह्यसुख की कैसी भेंट(!) ?

अंतरशांति तृप्ति देती है और बाह्य शांति से लोभ बढ़ता रहता है। जहाँ स्वार्थ बुद्धि है, वहाँ अंतरशांति नहीं रहती।

अहंकार विलय होने से सनातन सुख

जितना उल्टा चले उतना इगोइज़म (अहंकार) बढ़ता है और जितना इगोइज़म विलय हो उतना सुख बरतता रहता है। हमारा इगोइज़म खत्म हो गया है, इसलिए निरंतर सनातन सुख रहता है। दुःख में भी सुख रहे, वह खरा सुख है। कोई अपमान करे तब भी खुद को भीतर सुख लगता है, तब ऐसा होता है कि, 'अरे, यह कैसा सुख!'

आत्मा में परमसुख ही है, लेकिन कलुषित भाव के कारण वह सुख आवरित हो जाता है। यह सुख कहाँ से आता है? विषयों में से? मान में से? क्रोध में से? लोभ में से? इनमें किसीमें से नहीं आए तो समझना कि यह समकित है। जहाँ कुछ भी दुःख नहीं होता, वहाँ आत्मा है।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

26-28 जुलाई : अमरीका के अलाबामा स्टेट के फ्लोरन्स शहर में पहली बार पूज्य श्री के सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पहले दिन के सत्संग के बाद दूसरे दिन आयोजित ज्ञानविधि में 65 मुमुक्षओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ज्ञानविधि से पहले आत्मज्ञान की बेसिक बातें समझने के लिए और ज्ञानविधि के बाद पाँच आज्ञा से संबंधित फॉलोअप के लिए आप्तपुत्र सत्संग आयोजित हुआ था।

29-31 जुलाई : एटलान्टा शहर में पूरे दो साल बाद पूज्य श्री का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। एटलान्टा पहुँचना सभी के लिए सरल होने से आसपास के राज्यों के महात्मा भी आए थे। सत्संग-ज्ञानविधि में लगभग 1000 मुमुक्षु-महात्मा उपस्थित रहे। साउथ इस्ट रिजियन में अयोजित 'दादा दरबार' में 300 महात्माओं को पूज्य श्री के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। ज्ञानविधि में 195 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

5-7 अगस्त : शिकागो शहर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में 180 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्य श्री का पहले दिन का सत्संग स्ट्रीमवुड के स्वामीनारायण मंदिर हॉल में और दूसरे दिन ज्ञानविधि इटास्का के स्वामीनारायण मंदिर में आयोजित हुई। सेवार्थी महात्माओं के लिए पूज्य श्री के सत्संग-दर्शन का कार्यक्रम साईं मंदिर में आयोजित हुआ।

9-11 अगस्त : लॉस एन्जलिस में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में 150 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

12-14 अगस्त : सान होज़े में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि में 125 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। यू.एस सत्संग प्रवास के आखिरी दिन स्थानीय महात्माओं को पूज्य श्री के साथ मोर्निंग वॉक का लाभ प्राप्त हुआ।

17 अगस्त : अमरीका सत्संग प्रवास के बाद पूज्य श्री का सीमंधर सिटी में आगमन।

18 अगस्त : रक्षाबंधन के दिन पूज्य श्री अडालज त्रिमंदिर में पधारे और श्री सीमंधर स्वामी, परम पूज्य दादाश्री, पूज्य नीरूमाँ तथा सर्व भगवंतों को राखी बाँधी। मंदिर का सभागृह और पोडियम महात्माओं से भर गए थे। संदेश देते हुए पूज्यश्री ने कहा था कि हम भगवान से प्रार्थना करेंगे कि 'मोक्ष में जाने तक हमारी रक्षा करना।' अंत में विधि के बाद आरती हुई।

25 अगस्त : अडालज त्रिमंदिर के प्रांगण में जन्माष्टमी का त्योहार बहुत आनंद-उल्लास के साथ मनाया गया। अहमदाबाद और आसपास के इलाके से लगभग 15000 दर्शनार्थी भगवान श्री कृष्ण के दर्शन करने आए थे। पूरे दिन हर 30 मिनट के बाद 'शुद्ध प्रेम' पर विशेष विडियो प्रेज़न्टेशन और बच्चों के लिए पपेट शॉ आयोजित हुआ। शाम को मंदिर में दर्शनार्थियों को पूज्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। जॉयजेन्टिक हॉल के स्टेज पर गोर्वधन पर्वत बनाकर 'फोटो विद कृष्णा' थीम आयोजित हुई। रात्रि को बालकृष्ण का जन्मदिन मनाने के लिए जॉयजन्टिक हॉल और मंदिर लोगों से संपूर्णत: भर गए थे। विशेष भक्ति कार्यक्रम के बाद ब्रह्मचारी भाईयों द्वारा 'प्रत्यक्ष ज्ञानी की महिमा' प्रर्दशित करता हुआ सुंदर नाटक हुआ। GNC के बच्चों ने रास और नृत्य किया और रात्रि 12 बजे श्री कृष्ण के वेष में बच्चे ने मटकी फोड़ी थी। पूज्य श्री द्वारा भगवान श्री कृष्ण को झुला झुलाकर जन्मोत्सव मनाया गया और उसके बाद पूजन-आरती व प्रसाद अर्पण हुआ। सभी त्रिमंदिरों में विशेष भक्ति कार्यक्रम के साथ श्री कृष्ण जन्मोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया।

28 अगस्त-5 सितम्बर : इस बार पर्यूषण पारायण का पहला दिन रविवार होने की वजह से पूज्य श्री के दर्शन का कार्यक्रम पहले दिन रखा गया जिसमें लगभग 10 हज़ार महात्माओं को दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। दिनांक 29 को शुरु हुए पारायण में आप्तवाणी-13 (पूर्वार्ध) के भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म और ज्ञान-दर्शन प्रकरण का वाचन हुआ और उन पर पूज्य श्री द्वारा विस्तृत रूप से विवेचन किया गया। गहन टॉपिक होने के बावजूद भी महात्माओं को बहुत आनंद आया और कितनी नई बातें जानने को मिलीं। बालविज्ञान सीरीज़ पुस्तक 'धन्य बना यह जीवन' (गुज. और अंग्रेजी), आप्तवाणी और ब्रह्मचर्य ग्रंथ की ओडियो बुक्स और स्वरमणा-29 का पूज्य श्री द्वारा विमोचन किया गया। पारायण के अंतिम दिन, संवत्सरी प्रतिक्रमण के दौरान पूज्य श्री के समक्ष बहुत सारे महात्माओं ने पूरी ज़िंदगी में हुए दोषों का पश्चाताप करके, एक-दूसरे के पैर पड़कर माफी माँगी थी। इन दृश्य को देखकर महात्माओं की आँखें भर आई और अंत में पूज्य श्री ने पूरी ज़िंदगी में हुए दोषों के प्रतिक्रमण और सामायिक करवाई।

6-7 सितम्बर : पूज्य श्री का सीमंधर सिटी से ओस्ट्रेलिया-फीजी-न्यूज़ीलैन्ड और मलेशिया सत्संग यात्रा के लिए प्रयाण। पूज्य श्री ने सिंगापोर एयरपोर्ट पर वहाँ के महत्माओं के साथ फोन पर सत्संग किया और उसी दिन ऑस्ट्रेलिया के पर्थ शहर में सत्संग के लिए पहुँच गए।

9-11 सितम्बर : पर्थ शहर में चार सालों बाद पूज्य श्री का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्य श्री वहाँ के स्थानीय महात्मा और भारत से जुड़े महात्माओं के संग अराल्युएन बॉटनी गार्डन देखने गए थे और ट्रेन राइड का आनंद उठाया। लेक मोन्गर में पूज्य श्री के साथ मोर्निंग वॉक और 'दादा दरबार' के दौरान दर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ। सत्संग-ज्ञानविधि में 75 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया उस दौरान लगभग 300 महात्मा उपस्थित थे। आखिरी दिन बच्चों द्वारा 'पपेट प्ले' हुआ। पूज्य श्री ने पर्थ के महात्माओं की संख्या बढ़ने की वजह से उन्हें घर के बजाय हॉल में सत्संग करने के लिए और WMHT, MMHT, GNC ग्रुप के सत्संग आरंभ करने की सलाह दी।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
	✦ **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
USA	✦ '**TV Asia**' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
	✦ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
USA	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
Singapore	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
Australia	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
New Zealand	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
USA-UK-Africa-Aus.	✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

परम पूज्य दादा भगवान का 109वाँ जन्मजयंती महोत्सव - वलसाड शहर में

(आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में)

9 नवम्बर (बुध), शाम 5 बजे से - **उद्घाटन समारोह**, तथा शाम 8-30 से 10 - **सत्संग**

10 नवम्बर (गुरु), सुबह 9-30 से 12 (**टोपिक**-वाणी मधुरी होने के कारण) **;** शाम 7-30 से 10 - **सत्संग**

11 नवम्बर (शुक्र), सुबह 9-30 से 12 (**टोपिक**-समभाव-विषमभाव) **;** शाम 7-30 से 10 - **सत्संग**

12 नवम्बर (शनि), सुबह 9-30 से 12 **;** शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

13 नवम्बर (रवि), सुबह 8 से 1, शाम 4-30 से 6-30 - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**

14 एवं 15 नवम्बर शाम 5 से 10 चिल्ड्रन पार्क और थीम पार्क सिर्फ वलसाड के स्थानिक लोगो के लिए खुला रहेगा।

स्थल : आई.पी. गांधी हाईस्कूल के सामने, वांकी नदी के पास, जुजवा गाँव, वलसाड-धरमपुर रोड. **संपर्क :** 9924343245

नोट : वलसाड रेल्वे स्टेशन से महोत्सव स्थल 6.5 किमी की दूरी पर है। धरमपुर चोकडी से महोत्सव स्थल पहुँचने के लिए फ्री वाहन व्यवस्था उपलब्ध रहेगी, जिसका अंतर 2.5 किमी है।

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह ९ से शाम ६ के दौरान) पर दि. 23 अक्तूबर 2016 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं।** ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 3) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

दिल्ली	**दिनांक :** 18-19-20 **नवम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 9999533946
अमरावती	**दिनांक :** 8 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 9422335982
नांदेड	**दिनांक :** 9 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 8806665557
औरंगाबाद	**दिनांक :** 10-11 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 8308008897
जालना	**दिनांक :** 12 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 9822601695
भुसावल	**दिनांक :** 16 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 9921883007
बुरहानपुर	**दिनांक :** 16 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 7049451449
चोपडा	**दिनांक :** 17 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 9922473433
धुले	**दिनांक :** 17 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 9423182114
पचोरा	**दिनांक :** 18 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 9028163756
जलगाँव	**दिनांक :** 18 **दिसम्बर**	**समय एवं स्थल की जानकारी हेतु**	**संपर्क :** 8806869874

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

पूणे

21 अक्तूबर (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-व्यवसाय में सही-गलत)
22 अक्तूबर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-मैं करता हूँ, मैं करता हूँ वही अज्ञानता)
23 अक्तूबर (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल: गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम केम्पस, स्वारगेट बस स्टेशन के पास, **पूणे**. **संपर्क :** 7218473468
24 अक्तूबर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: स्वयंवर मंगल कार्यालय, सिटी प्राइड के पास, 695/3/27, पूणे-सतारा रोड.

अडालज त्रिमंदिर

30 अक्तूबर (रवि), 4-30 से 7 - **सत्संग** तथा रात 8-30 से 10-30 - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**
31 अक्तूबर (सोम), सुबह 8-30 से 1, शाम 5 से 6-30 -**नूतन वर्ष (वि.सं.२०७३) के अवसर पर पूजन-दर्शन**
3 दिसम्बर (शनि), शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **4 दिसम्बर** (रवि), दोपहर 4-30 से 7 - **ज्ञानविधि**

नवसारी

5 नवम्बर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-जीओ, जीवन क्लेश रहित)
6 नवम्बर (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
7 नवम्बर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल: संस्कार भारती हाइस्कूल, आशापुरी मंदिर रोड, **नवसारी** (गुजरात). **संपर्क :** 9924345333

कोलकाता

19 नवम्बर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-लक्ष्मी जाए तब...)
20 नवम्बर (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल: जी.डी.बिरला सभाघर, 29, आसुतोष चौधरी एवन्यु, बिरला मंदिर, बालीगंज, **कोलकाता**. **संपर्क :** 9830093230
21 नवम्बर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 -**आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 9830093230

भिलाई

22 नवम्बर (मंगल), शाम 5 से 8 - **सत्संग** (**टोपिक**-रिलेटिव धर्म-रियल धर्म)
23 नवम्बर (बुध), शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**
स्थल: पुलिस ग्राउन्ड, सेक्टर-6, **भिलाई** (छत्तीसगढ़). **संपर्क :** 8349545600
24 नवम्बर (गुरु), शाम 5 से 8 - **आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 8349545600

दिल्ली

25 नवम्बर (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-नीति-प्रमाणिकता)
26 नवम्बर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** (**टोपिक**-टालिए, भ्रांति कर्तापद की)
27 नवम्बर (रवि), शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**
स्थल: तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, **न्यु दिल्ली**. **संपर्क :** 9999533946, 9810098564
28 नवम्बर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 -**आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 7503987041

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

अक्तूबर 2016
वर्ष - 11 अंक - 12
अखंड क्रमांक - 132

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

जितना ज़्यादा विनय, उतनी ही ज़्यादा कृपा

हम जो ज्ञान देते हैं उसमें कृपा से ही काम होगा। भीतर जो प्रकट हुए हैं, उन 'दादा भगवान' की ही सीधी कृपा उतर जाती है। उससे काम निकाल लेना है। हर एक पर उसकी योग्यता के अनुसार कृपा उतरती है, और जितना ज़्यादा विनय उतनी ही ज़्यादा कृपा। अगर सब से बड़ा गुण कोई है तो वह है विनय! विनय तो मोक्षमार्ग में मुख्य चीज़ है। वीतराग का मार्ग पूरा विनय का ही मार्ग है। वह विनय ही आखिर में उसे परम विनय में ले जाएगा। परम विनय का फल मोक्ष है, क्रिया का फल मोक्ष नहीं है। जिसके वाणी, वर्तन व विनय मनोहर हुए, वे प्रेमात्मा बन गए! जहाँ पर वाणी, वर्तन व विनय मनोहर हैं, वहाँ पर यथार्थ श्रद्धा बैठती है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.